



अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

व्यक्ति पुण्योदय
के दिनों में भी प्रमाद में न
जाए, जागरूक रहे, सत्ता,
संपत्ति आदि का दुरुपयोग
न करे।
- आचार्य श्री भिक्षु



नई दिल्ली

● वर्ष 25 ● अंक 19 ● 12 फरवरी - 18 फरवरी, 2024

प्रत्येक सोमवार

● प्रकाशन तिथि : 10-02-2024 ● पेज 16

₹ 10 रुपये

बृहत्तर मुंबई में होगा 160वें मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन

■ एकादशम् अधिशास्ता करेंगे सारणा-वारणा और चतुर्मासों की घोषणा

”

षष्ठ्यधिकशतम् मर्यादा का महोत्सव,
नंदनवन भैक्षव शासन पाएगा ऊर्जा अभिनव ।
मौलिक मर्यादाएं जहां सुरक्षित,
गण का हर सदस्य पाएगा ऊर्जा अभिनव ।
महाश्रमण की पावन सन्निधि में,
वाशी मुंबई वासी पाएंगे ऊर्जा अभिनव ।

तेरापंथ की मौलिक मर्यादाएं

1. सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
2. विहार-चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।
3. अपना-अपना शिष्य-शिष्या न बनाएं।
4. आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें। दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।
5. आचार्य अपने गुरु भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी चुने, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।





नवी मुंबई में आयोजित दीक्षा समारोह में संयम प्रदाता ने दी शाश्वत सुख प्राप्ति की प्रेरणा

वीतरागता के लिए आवश्यक है अज्ञान और मोह का विवर्जन : आचार्यश्री महाश्रमण

कोपरखैरना, मुंबई,
३१ जनवरी, २०२४

कोपरखैरना के संयम महाश्रमण समवसरण में संयम के सुमेरु आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर सुख प्राप्त करने की आकांक्षा रहती है। एक सुख वह होता है जो पदार्थ जन्य होता है, बाह्य परिस्थिति की अनुकूलता से मिलता है, परंतु वह तात्कालिक होता है, अस्थायी होता है। कर्म की निर्जरा होने से जो भीतरी आनंद की प्राप्ति होती है वह सुख आंतरिक होता है, किसी बाह्य परिस्थिति पर निर्भर नहीं होता। आंतरिक सुख यदि पूर्णरूपेण प्राप्त हो जाए तो वह शाश्वत सुख हो जाता है।

भारतीय दार्शनिक साहित्य में मोक्ष का वर्णन प्राप्त होता है। जहाँ एकांत सुख होता है, वह मोक्ष होता है। एकांत सुख प्राप्त करने की कई शर्तें बताई गई हैं। पहली शर्त है—सर्व ज्ञान का प्रकाशन होना। सर्व ज्ञान प्रकाशन भी तभी हो सकता है जब उस आत्मा के राग-द्वेष का क्षय हो गया हो। राग-द्वेष मुक्ति अर्थात् वीतरागता के लिए अज्ञान और मोह का दूर होना जरूरी है।

अज्ञान दो प्रकार का होता है—औदयिक भावजन्य अज्ञान-ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाला अज्ञान। दूसरा ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से युक्त अज्ञान। ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से होने वाला अज्ञान बारहवें गुणस्थान तक होता है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से युक्त अज्ञान मिथ्यात्व युक्त होने के कारण अज्ञान है, वह अज्ञान पहले और तीसरे गुणस्थान में ही होता है। मिथ्या दृष्टि भी दो प्रकार की होती



है—एक मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से होने वाली और दूसरी दर्शन मोहनीय कर्म के उदय से होने वाली। हमें अज्ञान और मोह का विवर्जन करना होगा तभी वीतरागता की स्थिति प्राप्त हो सकेगी।

आज दीक्षा समारोह आयोजित हो रहा है। एकांत सुख वाला मोक्ष पाने के लिए हमें दीक्षा लेनी चाहिए। मुनि दीक्षा होना बहुत बड़े भाग्य की बात होती है। प्रत्याख्यानवरण कषाय के क्षयोपशम के बिना दीक्षा प्राप्त नहीं हो सकती। कवित्व या राजत्व की अपेक्षा मुनित्व की प्राप्ति होना दुर्लभ और बड़ी बात होती है।

दीक्षा संस्कार शुरू करते हुए पूज्यप्रवर ने परिजनों से मौखिक आज्ञा प्राप्त की। भगवान महावीर, तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु एवं उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा की श्रद्धासिक्त स्मृति कर, आचार्यप्रवर ने आर्षवाणी का

उच्चारण कराते हुए मुमुक्षु मुकेश को यावज्जीवन के लिए तीन करण, तीन योग से सर्व सावद्य योग का त्याग करवाकर सामायिक चारित्र्य ग्रहण करवाया। आर्ष वाणी से अतीत की आलोचना के पश्चात पूज्यप्रवर ने नव दीक्षित मुनि का केश लुंचन कर रजोहरण प्रदान किया। नामकरण संस्कार कराते हुए पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित मुनि का नाम मुनि मुकेश कुमार रखा एवं संयम जीवन हेतु पावन प्रेरणा प्रदान करवाई।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आज के इस युग में लोग भौतिक सुखों को प्राप्त करने के लिए दौड़-भाग कर रहे हैं पर उन्हें आंतरिक सुख नहीं मिल रहा है। धन के द्वारा भौतिक समृद्धि तो प्राप्त की जा सकती है, क्षणिक शांति मिल सकती है पर स्थायी शांति के लिए अध्यात्म का

मार्ग की अपनाना होगा। जो त्याग की दिशा में आगे बढ़ता है उसे सुख की अनुभूति होती है। त्याग के मार्ग पर वही प्रस्थित हो सकता है जिसके भीतर में वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हो जाते हैं। उपाध्याय यशोविजयजी ने ज्ञानसार में वैराग्य के तीन प्रकार बतलाए हैं—दुःख गर्भित, मोह गर्भित, ज्ञानगर्भित वैराग्य।

ज्ञान गर्भित वैराग्य व्यक्ति को शाश्वत सुख की ओर ले जाने वाला होता है। तेरापंथ धर्मसंघ की दीक्षा विलक्षण दीक्षा है, क्योंकि यहाँ प्रायः दीक्षा संस्कार आचार्यवर के द्वारा ही संपन्न किया जाता है। यह दीक्षा सर्वात्मना समर्पण की दीक्षा होती है। दीक्षा के समय केश और क्लेश का मुंडन किया जाता है, क्लेश के मुंडन के बाद ही दीक्षार्थी आत्मिक आनंद को प्राप्त करता है।

दीक्षा संस्कार से पूर्व मुमुक्षु सुरेंद्र ने दीक्षार्थी का परिचय प्रस्तुत किया एवं उपासक जयंती लाल सुराणा ने आज्ञा पत्र का वाचन किया। मुमुक्षु मुकेश के पिता प्रकाश चिप्पड़ द्वारा आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में आज्ञा पत्र निवेदित किया गया। मुमुक्षु मुकेश चिप्पड़ ने अपनी भावनाओं को शब्दों में पिरोते हुए कहा कि आचार्यप्रवर द्वारा संबोधि पुस्तक के स्वाध्याय की प्रेरणा मेरे जीवन की दशा और दिशा बदलने वाली थी।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वागताध्यक्ष भगवती पगारिया, सभाध्यक्ष जसराज छाजेड़ एवं डॉ० संजीव गणेश नाईक ने अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई।



शरीर रूपी नौका से भवसागर तरणे के लिए करें धर्म साधना : आचार्यश्री महाश्रमण



उलवे, ४ फरवरी, २०२४

अध्यात्म का पथ प्रशस्त करते हुए वृहत्तर मुंबई में यात्रायित परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उलवे के महाश्रमण समवसरण में फरमाया कि जीवन में जीव और शरीर दोनों विद्यमान हैं। जीव रहित शरीर है तो जीवन नहीं और शरीर रहित जीवन है तो संसारी अवस्था का जीवन नहीं होता है। इस प्रकार जीव और शरीर अलग-अलग हैं। नास्तिक विचारधारा के अनुसार जीव और शरीर एक ही हैं, आस्तिक मान्यता है कि जीव अलग है और शरीर अलग है। शरीर और आत्मा साथ में तो हैं परंतु दोनों का अस्तित्व अलग-अलग है। रायपसेणीयम आगम में आचार्य कुमारश्रमण केशी और राजा प्रदेशी के बीच की चर्चा का वर्णन मिलता है। दोनों में परस्पर चर्चा हुई और उस चर्चा में आखिर राजा प्रदेशी जो नास्तिक विचारधारा को मानने वाले थे उन्होंने कुमार श्रमण केशी की बात से सहमत होकर धर्म को स्वीकार कर लिया था।

शास्त्र में शरीर को नौका कहा गया है। शरीर एक नौका है और यह जीव नाविक है। यह संसार जन्म-मरण की परंपरा है, अर्णव (समुद्र) है और महर्षि लोग इस सागर को इस शरीर रूपी नौका से तर जाते हैं अर्थात् हमारा मनुष्य जीवन एक नौका के रूप में हमारे काम आ सकता है। हम इस शरीर से धर्म की साधना करें, संयम और तप से अपने आपको भावित करें तो यह शरीर इस भवसागर से पार कराने में एक नौका की भूमिका अदा कर सकता है।

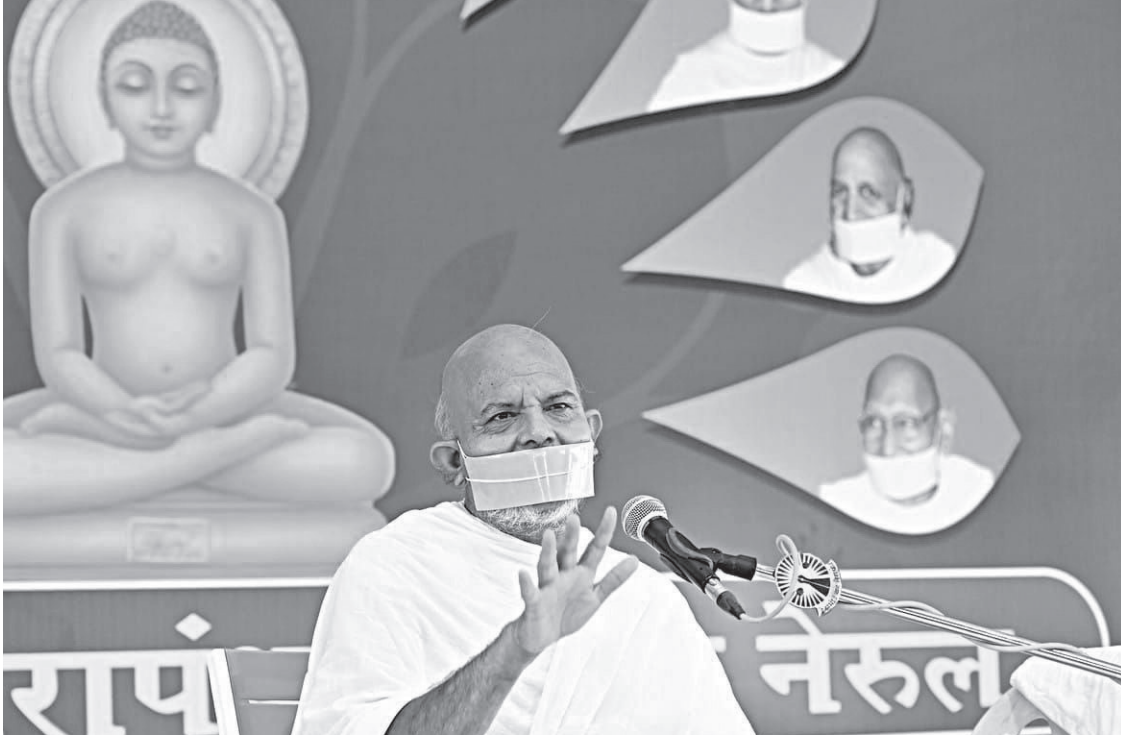
(शेष पृष्ठ ४ पर)

दुर्लभ मनुष्य जीवन को पाकर प्रमाद न करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नेरुल, ३ फरवरी, २०२४

नेरुल प्रवास के दूसरे दिन युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि उत्तराध्ययन में कहा गया है कि मनुष्य भव दुर्लभ है। लंबे काल तक प्राणियों को मनुष्य जन्म सुलभ नहीं होता है। कर्मों का अपना विपाक है। इस दुर्लभता को जानकर हम यह चिंतन करें कि जो दुर्लभ बताया है, वो हमारे लिए अभी उपलब्ध है, हमें प्राप्त है। जो अनंत प्राणियों को अब तक नहीं मिल पाया है वह मनुष्य भव हमें प्राप्त है। इसलिए भगवान महावीर ने गौतम के नाम से संदेश दिया कि समय मात्र भी प्रमाद मत करो। मनुष्य जन्म के अवसर को पाकर अब प्रमाद में मत रहो।

यह मनुष्य जन्म दुर्लभ भी है और विशिष्ट भी है। पाँच इंद्रियाँ इसमें प्राप्त होती हैं। यही वह जीवन है जिसमें प्राणी साधना करके मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इस मनुष्य जीवन का लाभ उठाने के लिए पहला उपाय बताया गया— वीतराग-जिनेश्वर भगवान की भक्ति करें, स्तुति, स्मरण और भावात्मक रमण करें। जैसे बच्चे बड़ों का सहारा लेकर आगे बढ़ते हैं, लता आलंबन से विकास करती हैं, कम विकसित को ज्यादा विकसित का सहारा चाहिए, वैसे ही हम भी साधना के क्षेत्र में आरोहण करने के लिए वीतराग भगवान की स्तुति करें, भक्ति करें तो



हममें भी वीतरागता के कुछ अंश अवतरित हो सकते हैं। श्रीमद् जयाचार्य का चौबीसी ग्रंथ जिनेंद्र भक्ति का अच्छा माध्यम है, उसका स्वाध्याय किया जा सकता है।

दूसरा उपाय बताया गया कि गुरु की पर्युपासना करो। महाविदेह क्षेत्र में तो हमेशा कम से कम बीस तीर्थंकर रहते हैं। दुनिया का सौभाग्य है कि ये दुनिया तीर्थंकरों से खाली नहीं होती, कम से कम २० तीर्थंकर सदा इस संसार में साधना करते हैं। पर भरत क्षेत्र में अभी कोई

तीर्थंकर विद्यमान नहीं है, तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्य विद्यमान हैं, उनकी उपासना-भक्ति करो, उनके नैकट्य का लाभ लो।

तीसरा उपाय है—सत्वानुकंपा। प्राणियों के प्रति अनुकंपा, दया का भाव रखो। किसी को तकलीफ या कष्ट न हो, हो सके तो आध्यात्मिक-चित्त समाधि पहुँचाने का प्रयास करो। चारित्रात्मा निर्वद्य वैय्यावृत्य का कार्य करें, गृहस्थ दूसरे गृहस्थ को धार्मिक ज्ञान देने का प्रयास करें।

चौथा उपाय बताया गया है—सुपात्र दान। शुद्ध साधु को दान देना अच्छी बात है। श्रावक भोजन करने से पहले मन में भावना भाँके कोई साधु आ जाए, मुझे सुपात्र दान का अवसर मिल जाए।

पाँचवाँ उपाय है—गुणानुराग। गुणों से प्रेम करें, गुणों की पूजा करें, किसी से भी ईर्ष्या नहीं रखें।

छठा उपाय है—आगम का श्रवण करना। चतुरेन्द्रिय तक के जीवों को तो कान ही नहीं मिलते हैं, पंचेन्द्रिय जीवों में भी कुछ कान होने पर भी सुन नहीं पाते हैं। जिसे कान मिले हैं और सुनने की शक्ति भी प्राप्त है तो आगम वाणी,

उपदेशों को सुनने का प्रयास करें। आगम वाणी कानों में पड़ती है तो कल्याणकारी हो सकती है। संतों की वाणी सुननी चाहिए और जितना हो सके स्वीकार करने का प्रयास भी करना चाहिए। जिस प्रकार ग्राहक बिना पैसा माल नहीं खरीद सकता उसी प्रकार सामर्थ्य का धन नहीं हो तो संतों की वाणी भी ग्रहण नहीं की जा सकती। आगम एक प्रकार की दुकान है, साधु दुकानदार हैं, गृहस्थ ग्राहक बनकर आगम वाणी को ग्रहण कर सकते हैं। भीतर का भाव जाग जाए तो बड़ा नियम ले सकते हैं। इस प्रकार मनुष्य जन्म का लाभ उठाने का प्रयास करें, यह जन्म हमें मिला हुआ है इसका आत्म-कल्याण में उपयोग करने का प्रयास करें।

ओरलेंडों एवं न्यूजर्सी की यात्रा संपन्न कर गुरु चरणों में पहुँची समणी जिनप्रज्ञाजी एवं समणी अमलप्रज्ञा जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर के स्वागत में प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री महेश बाफना, तेमम की अध्यक्ष प्रियंका सिंघवी, पूर्व सांसद संजीव नाईक, जीएसटी कमिश्नर राजेश कोठारी ने उद्गार व्यक्त किए। तेमम के सदस्यों में गीत का संगान किया। ज्ञानशाला, किशोर मंडल एवं कन्या मंडल की प्रस्तुति हुई। मराठी स्कूल के बच्चों ने अणुव्रत गीत एवं स्कूल की विद्यार्थी स्नेहा सावंत ने नशामुक्ति पर प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मृषावाद से दूर रहे इंसान : आचार्यश्री महाश्रमण



फुंडे, ५ फरवरी, २०२४

तीर्थंकर के प्रतिनिधि अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपनी मंगल देशना में फरमाया कि जैन विद्या में पाप के १८ प्रकार बताए गए हैं। पाप स्थान, आश्रव और पाप बंध ये तीन घटनाएँ हो जाती हैं। एक आदमी प्राणातिपात हिंसा करता है, इसके साथ अतीत, भविष्य और वर्तमान भी जुड़े हुए

हैं। अतीत का संबंध पाप स्थान से है, जिसके कारण व्यक्ति पाप कर्म की ओर प्रवृत्त होता है। वर्तमान में व्यक्ति हिंसा करता है, उससे कर्म का बंध होता है जिसका फल उसे भविष्य में मिलने वाला होता है।

पाप की १८ प्रवृत्तियों में पहली है—प्राणातिपात अर्थात् जीव को मारने की प्रवृत्ति। जैसे प्राणातिपात तीनों कालों

से जुड़ा हुआ है वैसे ही मृषावाद-झूठ बोलना भी तीनों कालों से जुड़ा हुआ है। क्रोध, भय, हास्य, झूठ बोलने के कारण हो सकते हैं। आदमी कई बार अनजाने में या कई बार जान-बूझकर भी झूठ बोल देता है। स्वार्थ या परार्थ के लिए, दूसरे को कष्ट देने के उद्देश्य से या किसी को बचाने के उद्देश्य से भी झूठ बोल सकता है। कौन सा कार्य आदमी किस इरादे से करता है वह महत्त्वपूर्ण है। क्रिया में समानता हो सकती है पर उद्देश्य में अंतर हो सकता है। डॉक्टर रोगी के रोग मुक्ति के लिए चीर-फाड़ करता है और डाकू चोरी या हिंसा की दृष्टि से चीर-फाड़ करता है। यहाँ क्रिया में समानता हो सकती है पर उद्देश्य, भावना में बहुत अंतर है। कर्म बंधन का हमारा लक्ष्य महत्त्वपूर्ण होता है। हमारी भावना क्रिया के फल की भूमिका बनाती है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पावन स्मृति

सेठ हरगोपाल नन्हीदेवी जैन मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि०)

सी-2/12, अपर ग्राउंड फ्लोर, प्रशांत विहार, सेक्टर-14, रोहिणी, दिल्ली-85



श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० हरगोपाल जैन
स्वर्गवास
12-02-1979



श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व० नन्ही देवी जैन
स्वर्गवास
18-02-2007

जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है।

नत्थू राम जैन-कुसमलता जैन, नरेश-जयश्री जैन, विनोद-कविता जैन
पुनीत-गरिमा जैन, रितिक जैन, यशस्वी जैन

(उकलाना-हिसार-दिल्ली)



मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गीत

मेरं शरणं गच्छामि

● डॉ० साध्वी मंगलप्रज्ञा ●

गण-मंदिर में मर्यादा की, जगजग ज्योति जलाएँ।
हम ज्योतिर्मय बन जाएँ।

‘मेरं शरणं गच्छामि’ यह मंत्र सदा शिवदायी।
मर्यादा का परकोटा है, जीवन में वरदायी।
मर्यादा के महाकुंभ में, आओ डुबकी लगाएँ।

हम ज्योतिर्मय बन जाएँ।

मर्यादा से सज्जित है यह, आर्य भिक्षु का शासन।
मर्यादा का पाठ पढ़ाए, महाश्रमण का आसन।
आन-बान है शान संघ-मर्यादा मान बढ़ाएँ।

हम ज्योतिर्मय बन जाएँ।

मर्यादित, अनुशासित गण यह, चमके ज्यों ध्रुवतारा।
साँस-साँस में मर्यादा का, गूँज रहा जयनारा।
मर्यादा-पुरुषोत्तम प्रभु-चरणों में अर्घ्य चढ़ाएँ।

हम ज्योतिर्मय बन जाएँ।

मर्यादा का कवच पहनकर, निर्भय हम बन जाएँ।
मर्यादा की कलम हाथ में, लिख दें नई ऋचाएँ।
मर्यादा की शुभ्र-ज्योत्सना, जीवन को चमकाएँ।

हम ज्योतिर्मय बन जाएँ।

महानगर मुंबई में फैली, मर्यादा की परिमल।
वाशी में अब खिल रहे देखो, मर्यादा के शतदल।
मर्यादा के ‘सुपरस्टार’ गुरुवर को, शीश झुकाएँ।

हम ज्योतिर्मय बन जाएँ।

लय : जहाँ डाल-डाल पर----

यह तेरापंथ नियाला

● शासन गौरव साध्वी कनकश्री ‘लाडनूँ’ ●

जय-जय शासनऽऽऽ हो जय मर्यादा।

जय-जय शासन, जय मर्यादा, पावन घोष हमारा,
विश्व क्षितिज पर चमक रहा, तेरापंथ ज्यों ध्रुवतारा,
इसकी हिमालयी ऊँचाई, क्षीर समंदर-सी गहराईऽऽऽ
जय-जय शासन...

महावीर की परंपरा के, आर्य भिक्षु हस्ताक्षर,
सत्यशोध के लिए समर्पित चिंतन जैनागम पर।
उनका तेज-ओज था निरूपम, सोच विधायक अद्भुत उपशम।।

मर्यादा, अनुशासन के साँचे में गण को ढाला,
इसीलिए दुनिया कहती है, तेरापंथ निराला।
प्राण संघ का विनय-समर्पण, अहंकार ममकार विसर्जन।।

वासंती फूलों का ज्यों गुलदस्ता मर्यादोत्सव,
यहाँ शासना और साधना का आध्यात्मिक वैभव।
मर्यादा का मान बढ़ाएँ, शासन की महिमा महकाएँ।

महातपस्वी महाश्रमण गणनायक प्रबल प्रतापी,
दशों दिशाओं में जिनके यश की गाथाएँ व्यापी।
तीर्थंकर से अतिशय धारी, माघ महोत्सव जय-जयकारी।

लय : काला काला बादलिया---

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य भिक्षु युग

⑤ मुनि जीवोजी (तासोल) दीक्षा क्रमांक : ४४

मुनिश्री ने २६ वर्षों तक प्रतिवर्ष ५ से ११ तक का एक-एक थोकड़ा किया और भी विविध तपस्या की। सर्दी में एक पछेवड़ी में रहकर शीत सहन किया।

ग्रीष्मकाल में आतापना लेते।

— : साभार : शासन समुद्र : —

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर गीत

● साध्वी सिद्धांतश्री ●

गणपति गण के नेमा के नंद, हे प्रभो यह तेरापंथ।

तेरापंथ, तेरापंथ, सब मिल बोलो मेरापंथ,

जय ज्योतिचरण ज्योतिचरण जय ज्योतिचरण,

ज्योतिचरण ज्योतिचरण ज्योतिचरण।

जय ज्योतिचरण ज्योतिचरण ज्योतिचरण जय ज्योतिचरण,

ज्योतिचरण ज्योतिचरण ज्योतिचरण।

मर्यादा, मर्यादा ये मेरे गण की शान, होना है गण हित कुर्बान,
हो गण की आँखों के तारे हैं नेमानंद, बोलो जय जय तेरापंथ।।

वाशी ये काशी बन गया, शुभ दिन ये आज का आ गया,

हुई महर पुनः गणनाथ की, दरबार स्वर्ग सा सज गया।

जागा मुंबई का भाग जी, गूँजा मर्यादा राग जी,

गुरु के भक्तों की अखियों से, छलका है प्रेम अनुराग जी।

गण मेरा, गण मेरा, करना है संघ में बलिदान,

होना है गण हित कुर्बान।।

गण मर्यादा का अमर पत्र है, एक गुरु और एक छत्र है।

तेरापथ मेरापथ है भगवन्प्र, प्रश्न ना कोई ना क्यों एक तंत्र है।

सत्य शोध का पथ है पावन, श्री जय भिक्षु अखंडित शासन,

संविधान लिखा लोह कमल से, गूँजे चिहुँदिसि जय अनुशासन।

किसी भी, किसी भी स्थिति में ना हारे भिक्षु स्याम।

गण करता है कोटि प्रणाम।।

हो गण की आँखों के तारे हैं नेमानंद,

सुधरी की छतरयाँ बोल रही, वो कच्ची हाटें बोल रही,

उस यक्षराज की भक्ति से, अंधेरी ओरी बोल रही,

बोल रहे मन भक्तों के, अ०भी०रा० शि को० बोल रहे।

बाबे की धुन में हो के मगन, जय ज्योतिचरण सब बोल रहे।

मर्यादा अनुशासन में रत, साधु-साध्वियाँ बोल रहे।

मर्यादा मर्यादा ये मेरे गण की शान, होना है गण हित कुर्बान,

हो गण की आँखों के तारे हैं नेमानंद, बोलो जय जय तेरापंथ।

जय ज्योतिचरण ज्योतिचरण जय ज्योतिचरण।।

आज्ञा समर्पण और उमंग, जय ज्योतिचरण।।

पल पल है हम प्रभु के संग, जय ज्योतिचरण।।

दूजे दशक के पहले भिक्षु, जय ज्योतिचरण।।

छाया गुरु चरणन् नवरंग, जय ज्योतिचरण।।

लय : जय सियाराम---

शरीर रूपी नौका से भवसागर तरणे के लिए करें...

(पृष्ठ २ का शेष)

शरीर में कई बार बीमारी भी आ सकती है, बुढ़ापा भी आ सकता है, इंद्रियों की शक्ति कम हो सकती है। इसलिए जब तक शरीर की सक्षमता रहे तब तक साधना, आराधना पर ध्यान दें लेना चाहिए। धर्म की साधना शरीर से करनी है तो यह नौका है, वह ठीक रहनी चाहिए। शरीर बल के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता। मनोबल कितना ही हो पर शरीर बिलकुल अक्षम है तो कोरे मनोबल से काम हो पाना मुश्किल है। शरीर की सक्षमता होगी तो दूसरों की सेवा करने का अवसर भी मिल सकता है।

इसलिए जब तक शारीरिक कमजोरी ना आए, बुढ़ापा पीड़ित न करे, इंद्रियाँ भी हीन न बने तब तक आदमी को धर्म की अच्छी साधना कर लेनी चाहिए, धर्म का समाचरण कर लेना चाहिए। इसलिए शरीर की सक्षमता बहुत अपेक्षित है। चेहरा सुंदर है या नहीं कोई खास बात नहीं है पर शरीर की निरोगता, सक्षमता रहनी चाहिए।

जितना हो सके स्वयं अपना काम करें। अपने दो हाथ, दो पाँव हैं उनका उपयोग लेना चाहिए, दूसरों पर आश्रित नहीं होना चाहिए। कहा गया है—परवश होना दुःख है, स्वावलंबी होना सुख है। अपने हाथ-पाँव सक्षम रहें, दूसरों पर निर्भरता न रहे, सेवा सापेक्ष की अग्लान भाव से सेवा भी करें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वागताध्यक्ष चंद्र प्रकाश मेहता, डॉ० चेतन ने अपने विचार व्यक्त किए। तेममं ने गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मृषावाद से दूर रहे इंसान...

(पृष्ठ ३ का शेष)

शास्त्रकार ने कहा है हिंसक झूठ मत बोलो। न स्वयं के लिए, न दूसरे के लिए, न गुस्से से बोलो, न भय के कारण से बोलो, झूठ मत बोलो।

साधुओं के लिए सर्व मृषावाद विरमण तो महाव्रत है। सच्ची बात भी यदि हिंसा में योगदान देती हो तो साधु को तो ऐसी परिस्थिति में मौन रहना चाहिए, इससे झूठ और हिंसा दोनों से बचाव हो जाता है। गृहस्थ भी ऐसा झूठ न बोलें जिससे दूसरे को तकलीफ हो, हिंसा हो।

आचार्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात् विद्यालय की ओर से सुधीर महात्रे, प्रियंवदा ताम्बोडकर एवं अणुव्रत समिति से सुभाष मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मर्यादा महोत्सव पर विशेष मर्यादा एक प्रहरी

□ आचार्य तुलसी □

तेरापंथ विकासोन्मुख धर्मसंघ है, इसका एकमात्र कारण इसकी गौरवशाली मर्यादाएँ ही हैं। सामान्यतः मर्यादा को बंधन माना जाता है। इस संदर्भ में दो प्रश्न उपस्थित होते हैं। पहला प्रश्न होता है कि साधु-जीवन स्वतः मर्यादित जीवन है। इसमें पंचमहाव्रत का पालन अनिवार्य है। फिर ऊपर की मर्यादाएँ क्यों? दूसरा प्रश्न होता है कि साधुत्व स्वीकार करने का अर्थ है बंधन-मुक्ति। साधुत्व में भी यदि बंधन है तो फिर मुक्ति कहाँ होगी?

वस्तुस्थिति यह है कि मर्यादाएँ बंधन नहीं हैं, व्यवस्था हैं। ये स्वेच्छा से स्वीकृत हैं, बलात् थोपी हुई नहीं। मर्यादाओं का पालन तब तक अनिवार्य है, जब तक कल्पातीत अवस्था प्राप्त न हो जाए। मर्यादाएँ एक प्रहरी के समान होती हैं। जब कभी साधक के मार्ग च्युत होने की संभावना होती है, मर्यादाएँ पुनः उसे सन्मार्ग पर बढ़ने के लिए सजग कर देती हैं। मर्यादाएँ उस सीमा-रेखा के समान हैं, जो अवांछनीय पथ पर जाने से रोकती है।

आचार्य भिक्षु ने शास्त्रीय मर्यादाओं के पालन के साथ-साथ संघीय मर्यादाओं के पालन की भी अनिवार्यता बताई। किसी भी धर्मसंघ में पनपने वाली मर्यादाहीनता, अनुशासनहीनता, अव्यवस्था और उच्छृंखलता का क्या परिणाम आता है, इस बात से आचार्य भिक्षु भली-भाँति परिचित थे। इसलिए वे एक ऐसे धर्मसंघ की स्थापना करना चाहते थे, जिसकी नींव प्राणवान एवं मौलिक मर्यादाओं पर प्रतिष्ठित हो। आचार्य भिक्षु की सूझबूझ का ही परिणाम है कि शताब्दियों के बाद भी यह धर्मसंघ अपनी मर्यादाओं व व्यवस्थाओं के कारण एक आदरास्पद और गौरवशाली धर्मसंघ बना हुआ है।

मानसिक प्रसक्ति

यह शासन एक उपवन है। उपवन में विभिन्न तरह के फूल खिलते हैं और उनसे उपवन की शोभा होती है। संघ में भी विभिन्न प्रकृति के साधु होते हैं। उन सबके साथ शांति व समाधि से रहना एक बहुत बड़ी साधना है।

संघ के हर सदस्य की अपेक्षा की पूर्ति करने के लिए आचार्य तो जिम्मेदार हैं ही, संघ की हर इकाई को भी इस दृष्टि से जागरूक एवं तत्पर रहना चाहिए। जिसे सेवा की अपेक्षा है, उसे सेवा दी जाए, जिसे सहयोग की अपेक्षा है, उसे सहयोग दिया जाए, जिसे विद्या की अपेक्षा है, उसे विद्या दी जाए। संघीय भावना को पुष्ट करने वाली इन बातों में यदि कहीं

कमी प्रतीत हो तो उसे तत्काल दूर करने का प्रयत्न होना चाहिए।

मानसिक दृष्टि से संघ के हर सदस्य को प्रसन्न रहना चाहिए। मानसिक प्रसक्ति के अभाव में यथार्थ चिंतन की शक्ति भी समाप्त हो जाती है।

भीष्म पितामह शर-शय्या पर लेटे हुए मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। पांडव और कौरव उनके पास बैठे थे। भीष्म पितामह ने इस अंतिम समय में सबको शिक्षा देनी प्रारंभ की।

उन्होंने धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप एवं कर्तव्य की सम्यक् व्याख्या के साथ दुष्प्रवृत्तियों से बचने की सक्रिय प्रेरणा दी। द्रौपदी भी वहाँ उपस्थित थी। यह उपदेश सुनकर वह अपनी हँसी न रोक सकी।

भीष्म पितामह ने कहा-‘बेटी! मैं तुम्हारी हँसी का कारण जानना चाहता हूँ।’ द्रौपदी कुछ सहमी। बात टालते हुए उसने कहा-‘पितामह! हँसी तो मुझे यों ही आ गई।’

भीष्म पितामह के दूसरी बार आग्रह करने पर द्रौपदी ने बताया-‘आज आप सबको धर्म का उपदेश दे रहे हैं पर जिस समय भरी सभा में मेरा चीरहरण हो रहा था, आप मौन कैसे हो गए थे? आपका धर्म-कर्म का उपदेश कहाँ चला गया था?’

बस, इसी बात पर मुझे हँसी आ गई। इस धृष्टता के लिए क्षमा करें।’

पितामह ने गंभीर स्वर में संबोधित करते हुए कहा-‘बेटी! तुम्हारा कथन बिलकुल सत्य है पर तुम जानती हो, उस समय मैं कौरवों का अन्न खा रहा था। उससे मेरे शरीर की समस्त धातुएँ विकृत हो चुकी थीं। शरीर की धातुओं को ही नहीं, विकृत घट के अन्न ने मेरे मन को भी विकृत बना दिया था। विकृत स्वर और विकृत मन से मैं धर्म की बात कैसे सोच सकता था?’

‘पर आज भी शरीर तो वही है, मन भी वही है फिर यह उपदेश कैसा?’-द्रौपदी ने प्रतिप्रश्न किया।

‘हाँ बेटी! शरीर तो वही है, मन भी वही है पर अर्जुन के बाणों ने मेरे सारे विकृत खून को बाहर निकाल दिया है, इसलिए मैं शरीर और मन दोनों स्तरों पर विकृतिरहित हो गया हूँ। परिणामतः धर्म का उपदेश करने की शक्ति मुझमें आ गई।’

इस घटना के माध्यम से मैं यह कहना चाहता हूँ कि किसी कारणवश किसी का मन दूषित हो गया हो तो मर्यादाएँ ऐसे तीरों का काम करें, जो उसके मन, वचन व कर्म को पुनः स्वस्थ बना सकें।

मुंबई मर्यादा महोत्सव पर आचार्यश्री तुलसी द्वारा वि०सं० २०११ में समुच्चारित गीत

गुरुदेव! तुम्हारे चरणों में ये शीष स्वयं झुक जाते हैं।
तव वाङ्मय अमृत-झरनों में ये हृदय हिलोरें खाते हैं।।

- (१) क्या वर्णन हो उपकारों का, जो जीवन जटिल समस्या है।
उसका भी सुंदर समाधान पाया, हम प्रकट दिखाते हैं।।
- (२) कैसी थी विशद विराट वृत्ति, जन-जन को जाग्रत करने की।
भयभीतों के भय हरने की, हम सुमर-सुमर सुख पाते हैं।।
- (३) वह व्याख्या विरल अहिंसा की, हिंसा की झलक जरा न जहाँ।
व्यापक मैत्री का विमल रूप, जन-जन जिसको अपनाते हैं।।
- (४) खुद जागो और जगाओ जग को, यही दया है दान यही।
इसमें सबका उत्थान मान, जन-जन में जागृति लाते हैं।।
- (५) संगठन का कैसा जादू, कर डाला सांवरिये-साधु!
झगड़ों की जड़ें जला डालीं, हम सब बलिहारी जाते हैं।।
- (६) ना शिथिलाचार पनप पाया, संयम की रही छत्र-छाया।
ओ! वीर पिता के वीर पुत्र! तुम पथ हम सरसाते हैं।।
- (७) वह जटल रहे मर्यादा तेरी, लोह-लेखिनी से लिखिता।
‘तुलसी’ सह समुदित श्वेत-संघ माघोत्सव आज मनाते हैं।।

लय : घनश्याम तुम्हारे द्वारे पर---



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

राजाजीनगर।

नेमीचंद शांतिलाल सुनील कटारिया के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश देरासरिया ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने कटारिया परिवार के प्रति शुभकामनाएँ प्रेषित की। सुनील कटारिया ने परिषद परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप से जयंतीलाल गांधी, ललित मुणोत एवं जैन संस्कार विधि के संयोजक सुनील सिंघवी की उपस्थिति रही।

नामकरण संस्कार

हैदराबाद।

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, हैदराबाद प्रवासी प्रदीप कुमुद देवी छाजेड़ के सुपुत्र आशीष एवं पुत्रवधू दर्शना छाजेड़ की सुपुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित जैन एवं जिनेंद्र बैद ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

परिषद द्वारा छाजेड़ एवं समदड़िया परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। महेंद्र समदड़िया द्वारा तेयुप, हैदराबाद का आभार व्यक्त किया गया।

हैदराबाद।

तारानगर निवासी, हैदराबाद प्रवासी अशोक जया विरमेचा के सुपुत्र सौरभ एवं पुत्रवधू गरिमा विरमेचा के सुपुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित जैन एवं जितेंद्र बैद ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

परिषद द्वारा विरमेचा परिवार को मंगलभावना पत्रक एवं नामकरण पत्रक भेंट किया गया। कार्यक्रम में परिषद के कार्यकारिणी सदस्य अरिहंत गुजरानी उपस्थित थे।

भूमि पूजन

रायपुर।

गंगाशहर निवासी, रायपुर प्रवासी राकेश भूरा के भूमि में नींव मुहूर्त जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अनिल दुगड़, सूर्यप्रकाश बैद व अर्पित गोखरू द्वारा विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

सभा मंत्री वीरेंद्र डागा ने संस्कारकों के साथ आयोजक परिवार व उपस्थित परिजनों को जैन संस्कार विधि हेतु साधुवाद देते हुए मंगलकामनाएँ दीं।

--: संक्षिप्त समाचार :--

आध्यात्मिक मिलन

कादिवली।

कादिवली तेरापंथ भवन में प्रवासित शासनश्री साध्वी विद्यावती जी ‘द्वितीय’ एवं मुनि आलोक कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनिश्री ने क्षमायाचना करते हुए वयोवृद्ध साध्वीश्रीजी की सुखपृच्छा की एवं स्वास्थ्य की मंगलकामना अभिव्यक्त की।

साध्वीवृंद ने भी खमतखामणा की और मुनिवृंद को विहार की सुखसाता पूछते हुए आह्लाद प्रकट किया।

ध्वजारोहण कार्यक्रम

मदुरै।

७५वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेरापंथ भवन पर ध्वजारोहण कार्यक्रम हुआ। राष्ट्रगान से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेरापंथ सभा, मदुरै के अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला ने तिरंगा फहराया। कार्यक्रम में महिला मंडल अध्यक्ष लता कोठारी, सभा मंत्री अभिनंदन बागरेचा, तेयुप मंत्री राजकुमार नाहटा, सभा मीडिया प्रभारी विकास संकलेचा, तेरापंथ नेटवर्क संयोजक अक्षय लोढ़ा आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।



मर्यादा महोत्सव पर विशेष

एक पन्ने के 'लिखत' ने ला दिया क्रांतिकारी परिवर्तन

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

मर्यादा महोत्सव का आधार

मर्यादा महोत्सव का आधार है—आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादा पत्र, जिसके आधार पर सदियों से मर्यादा महोत्सव मनाया जा रहा है। जिसके आधार पर तेरापंथ धर्मसंघ का संगठन चल रहा है और जिसके आधार पर एक नेतृत्व में सैकड़ों-सैकड़ों साधु-साध्वियाँ और लाखों श्रावक एक डोर से बंधे हुए हैं। पन्ने कमजोर हैं, स्याही भी जैसी उपलब्ध थी, वैसी ही है, लेकिन एक-एक अक्षर सबके लिए शिरोधार्य हो रहा है। इस एक पन्ने के 'लिखत' ने धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में प्रचलित मान्यताओं और परंपराओं में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया।

मर्यादा की मर्यादा।

एक होती है मर्यादा और दूसरी होती है मर्यादा की मर्यादा। सब मर्यादाओं का पालन कराने वाली मर्यादा यह है कि एक आचार्य का नेतृत्व हो। मर्यादा की अनुपालना वही करवा सकता है, जो पूरे धर्मसंघ को एक साथ लेकर चलता है। पहले परंपरा यह थी कि साधु अपनी इच्छा से दीक्षा देते, सब अपना-अपना अलग-अलग शिष्य बनाते। आचार्य भिक्षु ने पहली बार यह परंपरा तोड़ी। उन्होंने विधान किया—'दीक्षा देने के अधिकारी केवल आचार्य हैं। साधु अगर दीक्षा दे तो आचार्य की आज्ञा से आचार्य के नाम पर दे। दीक्षा देने के बाद उसे आचार्य को लाकर सौंप दे। आचार्य भिक्षु ने इस बात को अच्छी तरह से समझ लिया था कि संगठन को तोड़ने वाले दो प्रमुख तत्व हैं—अहंकार और ममकार। अहं प्रबल होता है तो संगठन चल नहीं सकता। उसका विखंडन होना अवश्यभावी है। इसी तरह ममकार या मेरापन भी संगठन को चलाने में बाधक बनता है। अहंकार और ममकार का विसर्जन हो, तभी संघ सुचारु रूप से चल सकता है।

आचार्य भिक्षु ने लिखा—**सगला रे सगला साध रे साधवी राखज्यो हेत विसेख।** सभी साधु-साध्वियाँ परस्पर में सौहार्द रखें। इसी तरह उन्होंने स्थान-स्थान पर लिखा कि आचार्य किसी को आगे लाएँ तो कोई ईर्ष्या न करे। इसी को व्याख्यायित करते हुए जयाचार्य ने लिखा—'आचार्य किसी को योग्य समझकर उसे अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते हैं, तो कोई उससे ईर्ष्या न करे।'

श्रेष्ठ कौन?

महान सूफी संत रज्जब से किसी ने कहा—'यह कुत्ता सामने बैठा है। आप बताएँ कि आप श्रेष्ठ हैं या यह कुत्ता?'

उन्होंने कहा—'जब तक परोपकार की भावना है, ईर्ष्या मन में नहीं है, मैं इस कुत्ते से बेहतर हूँ, श्रेष्ठ हूँ। अगर परोपकार की भावना नहीं रही, मन में ईर्ष्या समा गई तो यह कुत्ता मुझसे कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है।' यह बहुत महत्वपूर्ण बात है। संगठन

चलता है प्रमोद भावना से। पक्षपात किसी व्यक्ति का नहीं, गुणों के प्रति होना चाहिए। जिस संगठन में परस्पर द्वेष, ईर्ष्या, मलिनता का व्यवहार होता है, परस्परता का व्यवहार नहीं होता, वह ज्यादा दिन तक टिक नहीं पाता। इस पत्र में आचार्य भिक्षु ने संगठन को चिरंजीवी बनाने वाले ऐसे-ऐसे आधारभूत सूत्रों को लिखा, जिनके आधार पर आज ढाई सौ वर्ष से तेरापंथ चल रहा है, विकासवान बना हुआ है, निरंतर प्रवर्धमान है।

इस दुनिया में अनेक तरह के महोत्सव मनाए जा रहे हैं। ऐसा कोई दिन शायद ही जाता होगा, जब कोई उत्सव या महोत्सव का आयोजन कहीं न कहीं हो रहा हो, लेकिन मर्यादा और अनुशासन का

महोत्सव मनाने वाला एकमात्र तेरापंथ धर्मसंघ है। पूरे राष्ट्र और समाज को आज अगर सबसे ज्यादा जरूरत किसी चीज की है तो वह मर्यादा और अनुशासन है। इसके अभाव में समाज और राष्ट्र में कैसी-कैसी समस्याएँ खड़ी हो रही हैं, सब जानते हैं। मर्यादा और अनुशासन की कमी ने समाज और राष्ट्र की व्यवस्था को तार-तार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। मर्यादा और अनुशासन की कमी ने परिवारों को विखंडित किया है। इसके अभाव में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।

मर्यादा का आधार

संगठन कब चलता है? अनुशासन कब सफल होता है? मर्यादा का आधार क्या है?

मुंबई मर्यादा महोत्सव पर आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा वि०सं० २०५९ में समुच्चारित गीत

**साधना का पथ तुम्हारा, देव! कैसे खोज पाएँ।
और किस आराधना से, संघनिष्ठा को बढ़ाएँ।।**

- (१) भिक्षु तुमने जो दिया है, संघ ने तुमसे लिया है। उस अमर अनुशासन की, वर्णमाला को पढ़ाएँ।।
- (२) दूर को तुमने सहा है, निकट को भी तब सहा है। शक्ति का वह मंत्र गुरुवर! आज हम सबको बताएँ।।
- (३) ताप को तुमने सहा है, भूख को तुमने सहा है। शक्ति के उस पीठ पर अब, सिद्धि का गुर समझ पाएँ।।
- (४) सोचता हूँ वह सही है, सीख का अवसर नहीं है। क्या नहीं मैं जानता जो, दूसरे मुझको सिखाएँ।।
- (५) सीख दे वह तो बया है, और यह बंदर नया है। मान की आँधी थमे अब, विनय का दीपक जलाएँ।।
- (६) विष अमृत बनता विनय से, वर विधायक भाव लय से। फिर निषेधात्मक प्रकृति से, अमृत को विष क्यों बनाएँ।।
- (७) हो अहिंसा का प्रखर स्वर, सुन सके हर मनुज हर घर। चेतना के तार सारे, दृष्टि बल से झनझनाएँ।।
- (८) बीज बोया क्रांति का जो, फल मिला वह शांति का जो। आर्य तुलसी का अनुग्रह, सफल हो सब कल्पनाएँ।।
- (९) मुंबई में हम प्रवासी, संघ का मानस प्रवासी। है प्रतीक्षा में प्रणत सब, भाव से सबको बुलाएँ।।
- (१०) सिद्ध मर्यादा महोत्सव, सफल हो 'महाप्रज्ञ' हर लव। मुंबई के सिंधु तट पर, संघ को शिखरों चढ़ाएँ।।
- (११) संत सत्तावन यहाँ हैं, बानबे सतियाँ यहाँ हैं। समणियाँ नब्बे यहाँ हैं, समण चारों ही यहाँ हैं। एकता का सूत्र गण हैं, नित नई खोले दिशाएँ।।

लय : लक्ष्य है ऊँचा हमारा---

मर्यादा का पहला अधार है—इच्छा का समर्पण। जब तक व्यक्ति अपनी इच्छा को महत्त्व देता है, वह संगठन का अंग बनकर नहीं रह सकता। संगठन पहले, मेरी इच्छा बाद में, जहाँ यह भावना होती है, वहाँ संगठन निर्बाध रूप से आगे बढ़ता है।

दूसरी बात सामुदायिक चेतना का जागरण। व्यक्तिवाद संगठन के लिए जहर की तरह है। व्यक्तिवाद तो स्वार्थ के आधार पर चलता है। हर बात में मतभेद है तो समझ लें कि स्वार्थ हावी है।

तीसरी बात है—व्यवस्था और प्रबंधन। जिस संगठन में व्यवस्था और प्रबंधन अच्छा होता है, वहाँ मर्यादा और अनुशासन सुचारु रूप से चलता है। मर्यादा का आधार है व्यवस्था। हमारे धर्मसंघ में आचार्यों ने व्यवस्था और प्रबंधन पर बहुत ध्यान दिया। मैनेजमेंट का शिक्षण-प्रशिक्षण जो आज शुरू हुआ है, वह हमारे धर्मसंघ में ढाई सौ वर्ष पहले शुरू हो गया था। हमारे यहाँ तो सारा काम ही व्यवस्था के साथ होता है। किसको कहाँ जाना है, कहाँ रहना है, क्या-क्या करना है, किस तरीके से करना है, इसकी पूरी व्यवस्था रहती है। इसीलिए हमारे यहाँ अराजकता की स्थिति कभी देखने को नहीं मिलती।

चौथी बात है—जागरूकता। हमारे यहाँ इस पर सबसे अधिक बल दिया गया। सब अपने दायित्व और कर्तव्य के प्रति जागरूक रहें। जयाचार्य ने व्यवस्था दी कि कोई भी साधु-साध्वी का सिंघाड़ा न्यारा से विहार करके आए तो आचार्य का काम है पृच्छा करना। उन्हें आचार्य को पूरी रिपोर्ट देनी पड़ती है कि पृथक् विहार और प्रवास के दौरान कहाँ-कहाँ गए और क्या-क्या किया। पूरे वर्ष भर का हिसाब देना पड़ता है। इसे हम अपनी भाषा में 'वार्षिक विवरण' कहते हैं।

पाँचवीं बात है—समय का नियोजन। मर्यादा के लिए जरूरी है समय का नियोजन। जहाँ समय का नियोजन होता है, वहाँ जागरूकता रहती है। जहाँ समय का नियोजन है, वहाँ व्यवस्था रहती है, सामुदायिक भावना रहती है। समय का नियोजन तभी होता है, जब इच्छा का समर्पण होता है, जो समय का मूल्य नहीं आँकता, वह जीवन में कभी न तो कोई बड़ा काम कर सकता है, न ही अपने जीवन में प्रगति कर सकता है। वह हमेशा अफरा-तफरी का जीवन जिएगा, जिंदगी भर अस्त-व्यस्त रहेगा।

जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं का दास बना रहता है, उससे समय का नियोजन नहीं हो सकता। जागरूकता की कसौटी है समय का नियोजन। जिसका कषाय मंद है, जो गुणानुरागी और गुणग्राही है और योग्यता को महत्त्व देता है, वही व्यक्ति जागरूक कहा जाएगा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

श्री महिला मंडल के विविध आयोजन

'अनमोल रिश्ता : सास-बहू का कार्यशाला का आयोजन है दराबाद।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, हैदराबाद द्वारा स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज के अंतर्गत रिश्ते अनमोल धरोहर 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, सिकंदराबाद में किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष कविता आच्छा ने बताया कि जीवन के रिश्तों में सबसे मजबूत और सबसे महत्वपूर्ण रिश्ता है सास-बहू का, जो आधार है परिवार में शांति, खुशहाली, सामंजस्य और समृद्धि का।

इस कार्यक्रम में सास और बहू की जोड़ियों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत मंडल की बहनों द्वारा संकल्प गीत से की गई। अध्यक्ष कविता आच्छा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम तीन चरण में आयोजित किया गया। प्रथम चरण में 9 से 2 मिनट में सभी ने अपनी रोचक प्रस्तुति दी। दूसरे चरण में जोड़ियों ने मूक अभिव्यक्ति दी और तीसरे चरण में बहनों को ऑन द स्पॉट टॉपिक देकर उनकी प्रतिभा को आँका गया। इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक थे सरोज भंडारी एवं सरोज सुराणा।

मुख्य वक्ता अंजू बैद ने सास और बहू में सामंजस्य कैसे हो विषय पर प्रकाश डाला। कार्यशाला की संयोजिकाओं ने गीत की प्रस्तुति दी। अंत में प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए और पारितोषिक द्वारा बहनों का उत्साहवर्धन किया गया। इस कार्यक्रम में महिला मंडल की संरक्षिका विमलेश सिंधी, परामर्शक चंदा जैन, पूर्व अध्यक्ष पुष्पा बरडिया, रीता सुराणा सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही। सुमन दुगड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सास-बहू की जोड़ियों में प्रथम प्रतियोगिता में रतनी देवी सुराणा-अर्चना सुराणा-सुंदर सुराणा, सरिता नखत-प्रतीक्षा नखत, पुष्पा सुराणा, दीक्षा सुराणा विजयी रहीं।

द्वितीय प्रतियोगिता में नीलम सेठिया, स्नेहा सेठिया, पुष्पा सुराणा, दीक्षा सुराणा, कलकत्ती सुराणा-सोनु सुराणा, रतनी देवी सुराणा, अर्चना सुराणा, सुंदर सुराणा, पुष्पा सुराणा, दीक्षा सुराणा, विजयी रही। वेशभूषा प्रतियोगिता

में प्रथम चाँद बैद-दीपिका बैद रही। कार्यक्रम का संचालन हर्षलता दुधोड़िया और ऋतु दुगड़ ने किया।

मदुरै।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत के संगान के साथ मंगलाचरण किया। सास-बहू के बारे में अपने भाव व्यक्त किए। जिसमें प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सास भी कभी बहू थी और बहू भी कभी सास बनेगी। समय के साथ सास-बहू की सोच बदली है, इस रिश्ते को मजबूत बनाने के लिए एक-दूसरे को समझना होगा। दोनों के जुड़ाव से परिवार में खुशहाली आती है, क्योंकि घर-परिवार की डोर होती है सास-बहू। बहू की गलती पर डाँटना भी चाहिए और उसके अच्छे कामों की प्रशंसा भी करनी चाहिए, इससे दोनों का रिश्ता और मजबूत बनता है।

सास-बहू की जोड़ियों ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यशाला में 5 प्रतिभागियों ने भाग लिया। महिला मंडल की अध्यक्ष लता कोठारी ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपिका फूलफगर ने किया। आभार ज्ञापन निवर्तमान अध्यक्ष सोनु पारख ने किया।

भीलवाड़।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में आयोजित किया गया। पिस्ता गोखरू द्वारा नवकार महामंत्र उच्चारण से कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। महिला मंडल अध्यक्ष मैना खाटेड़ ने समागत बहनों का स्वागत किया। अभातेममं कार्यसमिति सदस्य उषा सिसोदिया, मनाली चोरडिया ने निर्णायक की भूमिका निभाई। मोनिका दुगड़, ज्योति दुगड़ ने सास-बहू रिश्ते पर कॉमेडी ड्रामा की प्रस्तुति दी। पुष्पा पामेचा ने सास-बहू विषय पर गीतिका का संगान किया। एकरंगे परिधान में सास-बहू की जोड़ियों में सभी के आकर्षण का केंद्र रही। सास-बहू की जोड़ियों की

प्रतिबद्धता के साथ आई उनको पुरस्कृत किया गया।

सास-बहू कार्यशाला को रोचक बनाने के लिए चार ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक राउंड रखे गए। जिसमें प्रथम मीना स्वीटी नैनावटी, द्वितीय मधु नेहा ओस्तवाल, चंद्रकांता रितु चोरडिया, तृतीय सुधा निकिता खाटेड़ की जोड़ी रही। लीला मीना गांधी, कमला पिकी आच्छा, नयना सुंदर देवी गोखरू, सरोज सोनिका मेहता इन सभी जोड़ियों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दी।

विशेष आमंत्रित सदस्या उपासिका चंद्रकांता चोरडिया ने बताया कि सास-बहू के रिश्ते में आपसी समझ, प्रेम, सौहार्द एवं सामंजस्य हो तो जीवन मधुर बन जाता है। महिला मंडल टीम ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। महिला मंडल प्रचार-प्रसार मंत्री नीलम लोढ़ा ने बताया कि बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

उपस्थित ऑडियंस के लिए भी प्रश्नोत्तर रखे गए। कार्यशाला का संचालन सपना दुगड़ एवं कनकलता गोखरू ने किया। महिला मंडल सहमंत्री सुमन लोढ़ा ने आभार ज्ञापित किया।

'मेरा परिवार-मेरी जिम्मेदारी' कार्यशाला का आयोजन

गांधीनगर, बैंगलुरु।

अभातेममं के तत्वावधान में तेममं, गांधीनगर, बैंगलुरु द्वारा आयोजित कर्नाटक स्तरीय आंचलिक कार्यशाला 'मेरा परिवार-मेरी जिम्मेदारी' कार्यशाला का आगाज राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया।

परामर्शक लता जैन, रा०का०स० मुख्य वक्ता वीणा बैद, शशिकला नाहर, संतोष वेदमुथा की उपस्थिति रही। कर्नाटक के 98 क्षेत्रों से बहनों की उपस्थिति रही। कार्यशाला के आयोजन में अध्यक्ष ऋजू डूंगरवाल व मंत्री ज्योति संचेती का श्रम रहा।

♦ दूसरों पर अनुशासन करने वाला पहले स्वयं पर अनुशासन करे तो व्यवस्था सम्यक् हो सकती है।

— आचार्यश्री महाश्रमण

शिक्षा के बल पर जीती जा सकती है दुनिया

चंडीगढ़।

शिक्षा के बल पर दुनिया जीती जा सकती है, परंतु आज की शिक्षा व्यवस्था और उससे जुड़े लोग यह कथन को असत्य कर रहे हैं। आजकल घूस, दलाली, चोरी, एक खुला व्यापार सब शिक्षा जगत में आसानी से प्रवेश कर चुका है और हो न हो ये कहीं न कहीं नैतिक मूल्यों की कमी और उसके हनन का ही एक ज्वलंत परिणाम हमारे सामने उभरकर आया है। ज्ञान के नाम पर हम आज क्या परोस रहे हैं, जिससे आने वाले भविष्य में क्या परिणाम होगा इसका शायद किसी को अंदाजा भी नहीं है। यह विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने तुलसी सभागार में एक कार्यक्रम में व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि अच्छे आदर्श अच्छे जीवन की नींव हैं। सतर्कता के साथ सदैव कार्यशील एवं तत्पर रहना ही हमारे अच्छे भविष्य का निर्माण कर सकती है। जीवन विज्ञान के द्वारा विद्यार्थियों को उन्नत संस्कार प्रदान कर उनके जीवन को चरित्रवान और खुशहाल बनाया जा सकता है।

एक पन्ने के 'लिखत' ने ला दिया... (पृष्ठ 6 का शेष)

इससे भी महत्त्व की बात यह है कि अनुशासन और मर्यादा की संहिता बनाना। दूसरी बात उसका प्रशिक्षण देना है। प्रशिक्षण के बिना कोरा वाचिक उपदेश कारगर नहीं होता। प्रशिक्षण के द्वारा जो बात समझाई जाती है, वह हमारे भीतर बहुत गहरे तक उतर जाती है। विज्ञान की भाषा में कहें तो वह बात हमारे अवचेतन मन तक पहुँच जाती है। इसी अवचेतन मन में सारा निर्माण होता है। इसलिए प्रशिक्षण बहुत जरूरी है।

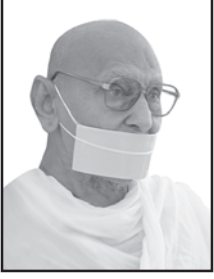
आचार्य भिक्षु से लेकर आचार्य तुलसी तक हमारे पूर्वाचार्यों ने जो प्रशिक्षण दिया हमारे धर्मसंघ में उसका अभी तक संकलन नहीं हुआ है। अगर संकलन हो तो प्रशिक्षण के सैकड़ों सूत्र हमें मिल जाएंगे। मैं प्रशिक्षण सूत्रों में से केवल एक ही चर्चा करना चाहूँगा जो सबसे जटिल बात है, वह है प्रकृति-सुधार का प्रशिक्षण। आदमी आकृति से तो बहुत सुंदर मिल जाएगा। सुंदर लोगों की कोई कमी नहीं है, लेकिन प्रकृति से सुंदर कितने लोग मिलते हैं? इसीलिए कहा गया कि प्रकृति या स्वभाव का सुधार करो। हमारे यहाँ आचार्यों ने प्रकृति सुधार का प्रशिक्षण दिया, जो सबसे कठिन और जटिल प्रशिक्षण है।

प्राचीनकाल में एक नौली होती थी, जिसमें सौ रुपये होते थे। जयाचार्य ने लिखा—'जिस व्यक्ति की प्रकृति अच्छी है, उसकी नौली में समझो निन्यानवे रुपये हैं, मात्र एक रुपया पढ़ाई का बाकी है।' आप इस बात के हार्द को समझें कि निन्यानवे रुपये तो प्रकृति के साथ आते हैं, एक रुपया होता है पढ़ाई-लिखाई का। आज के हालात से तुलना करें तो पाएँगे कि निन्यानवे रुपये तो हैं पढ़ाई के ओर एक रुपया या उससे भी कम है प्रकृति या स्वभाव का। जयाचार्य ने 'खोड़ीली प्रकृति' और 'चोखी प्रकृति' के रूप में स्वभाव का विभाजन या वर्गीकरण किया है। इस तरह प्रकृति या स्वभाव का विश्लेषण करते हुए उसका जो प्रशिक्षण जयाचार्य, आचार्य तुलसी आदि आचार्यों ने दिया है, मानता हूँ कि वह संगठन का मूल आधार बन रहा है।

एक आधार है प्रमोद भावना

प्रमोद भावना का भी प्रशिक्षण हमारे संघ में दिया जाता है। जिस संगठन के सदस्यों में प्रमोद भावना नहीं होती, जहाँ योग्यता का मूल्यांकन और सम्मान नहीं होता और जिस संघ में पूर्वाचार्यों द्वारा दिए गए अवदानों का सम्मान नहीं होता, वह संगठन और उस संगठन के सदस्य संघ में बाधा पहुँचाने वाले और संघ की जड़ काटने वाले होते हैं। प्रमोद भावना का मतलब है एक-दूसरे के प्रति हर्ष की भावना। आज हर क्षेत्र में इसकी कमी साफ देखी जा सकती है। बहुत जरूरी है प्रमोद भावना का विकास।

आचार्य भिक्षु ने संघ की सुरक्षा और व्यवस्था के लिए चिंतन किया और जो मर्यादा-व्यवस्था के सूत्र दिए, वे सर्वकालिक हैं। आज की स्थिति में भी बहुत कार्यकारी हैं, बल्कि यह कहें कि पहले से भी ज्यादा समीचीन हैं, उनकी मूल्यवत्ता कभी कम नहीं होगी।



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

बारह भावनाएँ

(पिछला शेष) इन श्लोकों में सम्यग्दृष्टि व्यक्ति के लक्षणों का निरूपण किया गया है। वे पाँच हैं—

- (१) आस्तिक्य—आत्मा, कर्म आदि में विश्वास।
- (२) शम—क्रोध आदि कषायों का उपशमन।
- (३) संवेग—मोक्ष के प्रति तीव्र अभिरुचि।
- (४) निर्वेद—वैराग्य। उसके तीन प्रकार हैं—संसार-वैराग्य, शरीर-वैराग्य और भोग-वैराग्य।
- (५) अनुकंपा—कृप भाव, सर्वभूतमैत्री—आत्मौपम्य भाव। प्राणीमात्र के प्रति अनुकंपा।

अहिंसा दया का पर्यायवाची नाम है। पंचाध्यायी में इसका बड़ा सुंदर विश्लेषण किया है। उसमें कहा है—‘जो समग्र प्राणियों के प्रति अनुग्रह है, उस अनुकंपा को दया जानना चाहिए। मैत्रीभाव, मध्यस्थता, शल्य-वर्जन और वैर-वर्जन ये अनुकंपा के अंतर्गत हैं। इससे दया का विशद स्वरूप हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है। जिस दया में किसी का भी उत्पीड़न नहीं होता, वस्तुतः वही सच्ची अनुकंपा है, दया है।

गौतम ने भगवान् महावीर से पूछा—‘भंते! दर्शन-संपन्नता का क्या लाभ है?’ भगवान् ने कहा—‘गौतम! दर्शन-संपन्नता से विपरीत दर्शन का अंत होता है। दर्शन-संपन्न व्यक्ति यथार्थद्रष्टा बन जाता है। उसमें सत्य की लौ जलती है, वह फिर बुझती नहीं। वह अनुत्तरज्ञान से आत्मा को भावित करता रहता है। यह आध्यात्मिक फल है। व्यावहारिक फल यह है कि सम्यग्दर्शी देवगति के सिवाय अन्य किसी गति का आयुष्य नहीं बाँधता।’

(८०) योगी व्रतेन संपन्नो, न लोकस्यैषणाञ्चरेत्।

भावशुद्धिः क्रियाश्चापि, प्रथयन् शिवमश्नुते।।

व्रतों से संपन्न योगी लोकैषणा में नहीं फँसता। वह मानसिक शुद्धि और सत्क्रियाओं का विस्तार करता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है।

(८१) न क्षीयन्ते न वर्धन्ते, सन्ति जीवा अवस्थिताः।

अजीवो जीवतां नैति, न जीवो यात्यजीवताम्।।

जीव अवस्थित हैं, न घटते हैं और न बढ़ते हैं। अजीव कभी जीव नहीं बनता और जीव कभी अजीव नहीं बनता।

(८२) अवस्थानमिदं ध्रौव्यं, द्रव्यमित्यभिधीयते।

पिरवर्तनमत्रैव, पर्यायः परिकीर्तितः।।

अवस्थान को ध्रौव्य कहा जाता है और इसी में जो परिवर्तन होता है, उसे पर्याय कहा जाता है। ध्रौव्य और परिवर्तन—दोनों द्रव्य के अंश हैं। द्रव्य का अर्थ है—इन दोनों की समष्टि।

एक बार गौतम ने पूछा—‘भगवन्! तत्त्व क्या है?’ भगवन् ने कहा—‘उत्पाद तत्त्व हैं।’ गौतम की समस्या सुलझी नहीं। उन्होंने फिर पूछा—‘भगवन्! तत्त्व क्या है?’ भगवन् ने कहा—‘विनाश तत्त्व है।’ अभी भी मन समाहित नहीं हुआ। तीसरी बार गौतम ने पूछा—‘भगवन्! तत्त्व क्या है?’ भगवान् ने कहा—‘ध्रुव तत्त्व है।’

उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य—यह तत्त्व-त्रयी है। गौतम गणधर ने इसी के आधार पर वाङ्मय का विस्तार किया था। उत्पाद और व्यय प्रत्येक चेतन और जड़ दोनों पदार्थों की अवस्थाएँ हैं। जड़ और चेतन दोनों ध्रुव हैं। जड़ चेतन नहीं होता और चेतन जड़ नहीं होता। अवस्थाओं का परिवर्तन इन दोनों में सतत चल रहा है। चेतन एक अवस्था को छोड़कर अन्य अवस्था में जाता है। यह आत्मा की अमरता है। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—‘पुराने कपड़े के फट जाने पर जिस प्रकार नया कपड़ा धारण किया जाता है, ऐसी प्रकार आत्मा भी अपनी वर्तमान जीर्ण स्थिति को त्यागकर नया रूप स्वीकार करती है। कभी देवत्व, कभी पशुत्व, कभी नारकीय, कभी मानवीय आकार में आत्मा का परिवर्तन होता रहता है। वह बालक से युवक और युवक से बूढ़ा बन मृत्यु का आलिंगन करती है। इन सबमें आत्मा विद्यमान रहती है। ये उनकी विभिन्न अवस्थाएँ हैं। चेतनत्व का विनाश नहीं होता।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

‘इच्छा और क्या हो सकती है? विवाह करना है। तुम बताओ, किसके साथ करना उचित होगा?’

‘इस विषय में आप मुझसे ज्यादा जानते हैं, फिर मैं क्या बताऊँ?’

‘कन्या पर माता का अधिकार अधिक होता है, इसलिए इस पर तुमने जो सोचा है, वह बताओ।’

‘क्या मैं अपनी भावना आपके सामने रखूँ जो अब तक मन में पलती रही है?’

‘मैं अवश्य जानना चाहूँगा।’

‘कुमार वर्द्धमान बहुत यशस्वी, मनस्वी और सुंदर हैं। मैं उनके साथ यशोदा का परिणय चाहती हूँ।’

‘मेरी भी यही इच्छा है, सद्यस्क नहीं किंतु दीर्घकालिक। मैं तुम्हारी भावना जानकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हम बाहर से ही एक नहीं हैं, भीतर से भी एक हैं।’

जितशत्रु ने दूत भेजकर अपना संदेश सिद्धार्थ तक पहुँचा दिया।

सिद्धार्थ और त्रिशला—दोनों को इस प्रस्ताव से प्रसन्नता हुई। उन्होंने इसे कुमार के सामने रखा। कुमार ने उसे स्वीकार कर दिया। वे बचपन से ही अनासक्त थे। वे ब्रह्मचारी जीवन जीना चाहते थे।

माता-पिता ने विवाह करने के लिए बहुत आग्रह किया। वे माता-पिता का बहुत सम्मान करते थे और माता-पिता का उनके प्रति प्रगाढ़ स्नेह था। वे एक दिन भी वर्द्धमान से विलग रहना पसंद नहीं करते थे। वर्द्धमान को इस स्नेह की स्पष्ट अनुभूति थी। इसी आधार पर उन्होंने संकल्प किया था ‘माता-पिता के जीवनकाल में मैं मुनि नहीं बनूँगा।’

वर्द्धमान में मुनि बनने की भावना और क्षमता—दोनों थी। ब्रह्मचर्य उनका प्रिय विषय था। इसे वे बहुत महत्त्व देते थे। यह उनके ब्रह्मचर्य को प्रतिष्ठा देने के भावी प्रयत्नों से ज्ञात होता है।

मुक्ति का अंतर्द्वन्द्व

कुछ लोग जानते हुए भी सोते हैं और कुछ लोग सोते हुए भी जागते हैं। जिनका अंतःकरण सुप्त होता है, वे जागते हुए भी सोते हैं। जिनका अंतःकरण जागृत होता है, वे सोते हुए भी जागते हैं।

कुमार वर्द्धमान सतत जागृति की कक्षा में पहुँच चुके थे। गर्भकाल में ही उन्हें अतीन्द्रिय ज्ञान उपलब्ध था। उनका अंतःकरण निसर्ग चेतना के आलोक से आलोकित था। भोग और ऐश्वर्य उनके पीछे-पीछे चल रहे थे, पर वे उनके पीछे नहीं चल रहे थे।

एक दिन कुमार वर्द्धमान आत्म-चिंतन में लीन थे। उनका निर्मल चित्त अंतर की गहराई में निमग्न हो रहा था। वे स्थूल की परतों को पार कर सूक्ष्म लोक में चले गए। उन्हें पूर्वजन्म की स्मृति हो आई। उन्होंने देखा, जीवन की शृंखला कहीं विच्छिन्न नहीं है। अतीत के अनंत में सर्वत्र उसके पदचिह्न अंकित हैं।

अतीत की कुछ घटनाओं ने कुमार के मन पर बहुत असर डाला। कुछ समय के लिए वे चिंतन की गहराई में खो गए।

दर्पण में प्रतिबिंब की भाँति अतीत उनकी आँखों के सामने उतर आया—‘मैं त्रिपुष्ट नाम का वासुदेव था। एक रात्रि को रंगशाला में नृत्यवाद्य का आयोजन हुआ। मैं और मेरे सभासद् उसमें उपस्थित थे। मैंने अपने अंगरक्षक को कहा, ‘मुझे नींद न आए तब तक यह आयोजन चलाना। मुझे नींद आने लगे तब इसे बंद कर देना।’ उस दिन मैं बहुत व्यस्त रहा। दिन भर के कार्यक्रम से थका हुआ था। रात्रि की ठंडी वेला। मनोहर नृत्य, लुभाने वाला वाद्य-गीत। समय, नर्तक, गायक और वादक का ऐसा दुर्लभ योग मिला कि सबका मन प्रफुल्लित हो उठा। लोग उस कार्यक्रम में तन्मय हो गए। वे कालातीत स्थिति का अनुभव करने लगे। मुझे नींद का अनुकूल वातावरण मिला। मैं थोड़े समय में ही निद्रालीन हो गया। आयोजन चलता रहा।

गहरी नींद के बाद मैं जागा। मेरे जागने के साथ मेरा अहं भी जागा। मैंने अंगरक्षक से पूछा, ‘क्या मेरी आज्ञा का अतिक्रमण नहीं हुआ है?’ वह कुछ उत्तर न दे सका। वह नृत्य और वाद्य-गीत में इतना खोया हुआ था कि उसे मेरी नींद और मेरे जागने का कोई भान ही नहीं रहा। मैं आज्ञा के उल्लंघन से तिलमिला उठा। मेरा क्रोध सीमा पार कर गया। मैंने आरक्षीवर्ग के द्वारा उसके कानों में गर्म सीसा डलवाया। मेरी हिंसा उसके प्राण लेकर ही शांत हुई।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

□ आचार्य महाश्रमण □



करणी बांझ न होय

दशम गुणस्थान में छह कर्मों का बंध होता है और ग्यारहवें गुणस्थान में केवल सात वेदनीय कर्म का ही बंध होता है, वह भी मात्र दो समय की स्थिति (ड्युरेशन) वाला होता है। यह ऐर्यापथिक बंध कहलाता है। प्रश्न है कि यहाँ सात वेदनीय बंध हो सकता है तो शुभ नाम और उच्च गोत्र का बंध क्यों नहीं हो सकता? वे भी तो पुण्य कर्म हैं। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अंतराय कर्म का बंध तो इसलिए नहीं हो सकता कि ये कर्म अशुभ हैं और अशुभ कर्म के कारणभूत कषाय और अशुभ योग आश्रव वहाँ उपलब्ध नहीं रहते हैं। किंतु शुभ नाम और उच्च गोत्र के बंधन में क्या कठिनाई है?

विचार करने पर ज्ञात होता है—वीतराग अवस्था में जो कर्म बंधता है, वह ठहर नहीं सकता, बंधा कि झड़ने की तैयारी। बंधा, भुगता और झड़ा। नाम कर्म और गोत्र कर्म की बंध स्थिति इस प्रकार की नहीं है। उनकी जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त की होती है। दूसरी बात आठ कर्मों में सात कर्म सांपरायिक स्वभाव के ही होते हैं। संपराय का अर्थ है कषाय। यानी कषाययुक्त आत्मा के ही उनका बंध होता है। वेदनीय कर्म सांपरायिक स्वभाव का तो होता ही है। सात वेदनीय और असात वेदनीय दोनों सांपरायिक स्वभाव के होते हैं, किंतु उनमें सात वेदनीय कर्म ऐर्यापथिक स्वभाव का भी होता है। वह ऐर्यापथिक स्वभाव वाला सात वेदनीय कर्म ही वीतराग के (ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें गुणस्थान में) बंधता है।

दशम गुणस्थान के पश्चाद्वर्ती गुणस्थानों में कषाय का अभाव होने के कारण सात कर्मों का बंध हो नहीं सकता, केवल सात वेदनीय, जो ऐर्यापथिक स्वभाव का होता है, का बंध होता है तथा इतनी अल्प स्थिति वाला कर्म केवल सात वेदनीय ही होता है इसलिए भी वहाँ (वीतराग-अवस्था में) अन्य कर्मों का बंध नहीं हो सकता। वहाँ केवल योग (प्रवृत्ति) के कारण बंध होता है, कषाय वहाँ होता नहीं और कषाय के अभाव में दीर्घकालिकता हो नहीं सकती। केवलयोग से होने वाला बंध ऐर्यापथिक बंध कहलाता है। यह बंध अबंध से सदृश अथवा नाममात्र का सा बंध होता है। चौदहवें गुणस्थान में योग भी नहीं होता। वहाँ सर्वथा अयोग की स्थिति होती है, कोई भी आश्रव नहीं होता, इसलिए चौदहवें गुणस्थान सर्वथा अबंध रहता है, नया बंधन नहीं होता, पुराने बंधे हुए चार अघाती कर्म ही रहते हैं।

जैन दर्शन नियंता (कर्तारूप ईश्वर) को नहीं मानता, किंतु वह नियति (सार्वभौम नियम, युनिवर्सल लॉ) को स्वीकार करता है। नियति का वैसा रूप भी जैन दर्शन को मान्य है, जिसमें आत्मकर्तृत्व (कर्म, पुरुषार्थ) भी अस्वीकृत हो जाता है। एक जीव अभव्य (मोक्ष जाने के अयोग्य) है। यह अभव्यता आठ कर्मों में से कौन से कर्म के उदय से है? यह किसी भी कर्म के उदय से नहीं है। यह पारिणामिक भाव का स्वतंत्र क्षेत्र है। इसमें किसी भी कर्म का हस्तक्षेप मान्य नहीं है। अभव्य है, तो है; भव्य है, तो है; प्रकृति या नियति से वैसा है क्यों है? इस 'क्यों' का उत्तर मेरे पास नहीं

है। सब बातें कर्माधारित नहीं होती हैं, कर्मातीत स्थितियाँ भी होती हैं। इस पारिणामिक भाव को हम आत्मकर्तृत्व नहीं कह सकते, यह पारिणामिक भाव जैन दर्शन का निरपेक्ष नियतिवाद है।

दुःख का मूल

संसार में दुःख है—यह एक प्रत्यक्ष सच्चाई है। दुःख का कारण भी दिखाई देता है। दुःखमुक्ति भी संभव मानी गई है और दुःखमुक्ति का मार्ग भी है। दुःख, दुःख-हेतु, दुःखमुक्ति और दुःखमुक्ति-हेतु—ये चार सच्चाइयाँ हैं। नव तत्त्वों में इन चारों सच्चाइयों को खोजें तो इस प्रकार उत्तर मिलता है—पाप तत्त्व दुःख है। आश्रव उसका हेतु है। मोक्ष दुःखमुक्ति है। संवर दुःखमुक्ति का मूल मार्ग है। जैन दर्शन का सार इस रूप में प्रतिपादित है—

आश्रवों भवहेतुः स्यात्, संवरो मोक्षकारणम्।

इतीयमार्हती दृष्टिः, शेषमस्याः प्रपञ्चनम्।।

आश्रव संसार-भ्रमण का हेतु है और संवर संसार-मुक्ति का। यही आर्हत (जैन) दर्शन है। शेष जो कुछ है इसी का विस्तार है।

नव तत्त्वों में पाँचवें तत्त्व है आश्रव। इसे आश्रवद्वार भी कहा जाता है। पुण्य-पाप का कारण आश्रव है। जैसे मकान में प्रवेश के लिए द्वार, कुंड के नाला और नौका के छिद्र होता है, वैसे ही कर्म के जाने (आत्मा के चिपकने) का रास्ता आश्रव होता है। आश्रव के पाँच प्रकार हैं—मिथ्यात्व, अत्रत, प्रमाद, कषाय और योग। 'शांतसुधारस भावना' में प्रमाद की पृथक् विवक्षा के अभाव में आश्रव चार ही बतलाए गए हैं—**मिथ्यात्वविरति कषाययोगसंज्ञाश्चत्वारः सुकृतिभिराश्रवाः प्रदिष्टाः।** विस्तार की विवक्षा में आश्रव के बीस भेद भी हो जाते हैं। यह विस्तार योग आश्रव के भेदों से हुआ है। अति संक्षेप में जाएँ तो, मुझे लगता है, आश्रव दो ही रह जाएँगे—कषाय और योग। कर्म-बंधन के दो ही कारण हैं। कषाय और योग। मिथ्यात्व अत्रत और प्रमाद—ये तीनों कषाय की ही विभिन्न अवस्थाएँ हैं। प्रथम और तृतीय गुणस्थान में मिथ्यात्व आदि पाँच आश्रव, दूसरे व चौथे गुणस्थान में अत्रत आदि चार आश्रव, पाँचवें गुणस्थान में अपूर्ण अत्रत तथा प्रमाद आदि तीन आश्रव, छठे गुणस्थान में प्रमाद आदि तीन आश्रव, सातवें से दसवें गुणस्थान तक कषाय और शुभ योग आश्रव, ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान तक मात्र शुभ योग आश्रव होता है। चौदहवें गुणस्थान अनाश्रव होता है, अबंध होता है। छठे गुणस्थान में अशुभ (सावद्य) योग वर्जनीय है, किंतु मोहवश हो भी सकता है। ग्यारहवें गुणस्थान में मोह (कषाय) की विद्यमानता रहती है परंतु वह सर्वथा उपशांत रहता है। वह वहाँ न विपाकोदय में और न ही प्रदेशोदय में रहता है, इसलिए कर्म का आश्रवण उससे हो नहीं सकता।

(क्रमशः)

स्वस्थ तन-मन चिंतन के लिए संयम आवश्यक

गंगाशहर।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान एवं तेममं के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कैंसर जागरूकता अभियान' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जिसमें आचार्य तुलसी कैंसर रिसर्च सेंटर के डॉक्टरों की टीम के द्वारा कैंसर के कारण और निवारण के बारे में विस्तार से बताया।

इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि एक बार लाल बहादूर शास्त्री ने कहा था कि स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। आज की भाषा में कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। आज शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर ध्यान देने की अपेक्षा है। आज जो कैंसर जैसी भयंकर बीमारियाँ

हो रही हैं उसका कारण है—असंयम। खान-पान, रहन-सहन, अतिभागीपभोग साधनों का उपयोग। ऐसी स्थितियों में अगर संयम नहीं होगा तो फिर रोगों का आक्रमण होना सहज है।

मुनिश्री ने कहा कि जब व्यक्ति सात्त्विक आहार, विहार, आचार-विचार नहीं रखेगा तब तक व्यक्ति को इसी प्रकार बीमारियों के दंश झेलने पड़ेंगे। आवश्यकता है रोग मुक्त, भोग मुक्त, तनाव मुक्त, तृष्णा मुक्त बनने के लिए असंतुलित आहार जैसे अति मिर्च-मशाले, खट्टी, मीठी, चिकनी वस्तुओं का परहेज करें। स्वस्थ तन-मन-चिंतन के लिए संयम परम आवश्यक है।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने

सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हंसराज डागा, मंत्री दीपक आंचलिया, उपाध्यक्ष किशन बैद, कार्यकारिणी सदस्य धर्मेन्द्र डाकलिया, मनीष बाफना, भंवरलाल सेठिया, राजेंद्र पारख, राजेंद्र बोथरा, तेममं, गंगाशहर की अध्यक्षता संजू लालाणी सहित सभा-संस्थाओं के अनेक पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

◆ यदि अप्रमत्ता के साथ समय का सदुपयोग किया जाए तो ऐसी मंजिल नहीं, जहाँ तक पहुँचा न जा सके।

— आचार्यश्री महाश्रमण

निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम द्वारा मरियापनपल्या स्थित गायत्री पार्क में महात्मा गांधी मेमोरियल ईयर के अवसर पर निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुक्रात नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। शिविर के अंतर्गत रैंडम ब्लड शुगर जाँच की गई। शिविर में कुल ६३ सदस्य लाभान्वित हुए। तेयुप सदस्यों ने एटीडीसी द्वारा प्रदत्त सेवाओं एवं डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत करवाया।

इस शिविर को व्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टाफ श्यामला का संपूर्ण सहयोग रहा। तेयुप से जयंतिलाल गांधी एवं अजिंक्या चौधरी ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।



मर्यादा महोत्सव पर विशेष

मर्यादा बंध नहीं, मुक्ति का द्वार है

□ शासनश्री मुनि विजय कुमार □

बंधन में रहना किसी को पसंद नहीं है।

आज का आदमी खुलापन पसंद करता है। आदमी ही नहीं, पशु-पक्षी भी बंधन पसंद नहीं करते। एक तोता भले वह सोने के पिंजरे में रहता है किंतु खुली हवा में उड़ान भरना ज्यादा पसंद करता है। पिंजरा उसे कैदखाने जैसा लगता है। एक लोक कथा है कि कोई कौआ उड़ता-उड़ता चिड़ियाघर में आ गया, वहाँ पिंजरे में कैद एक बत्तख के पास आया और बोला-बत्तख भाई! तुम बड़े भाग्यशाली हो तुम्हारा पूरा शरीर सफेद है, मन को मोहने वाला है। बत्तख बोला-कौआ भाई! मेरे से ज्यादा भाग्यशाली तो तोता है जिसका शरीर मेरे से ज्यादा आभा बिखेर रहा है, उसके सिर और चौंच तो बड़ी निराली है। कौआ तोते से मिला और उसके मनमोहक रूप को देखकर उसके भाग्य की सराहना करने लगा। तोते ने कौए से कहा-तुम एक बार मोर को देख लो, उस जैसा रंग बिरंगा और आकर्षक रूप कहीं नजर नहीं आएगा, दुनिया में सबसे ज्यादा भाग्यशाली तो वह है। वह मोर के पास गया, उसके शरीर से सुंदरता टपक रही थी, वह उसके भाग्य के गुणगान करने लगा। मोर ने कौए को टोकते हुए कहा-मैं तो दुर्भाग्यी हूँ जो इस कैदखाने में रहता हूँ। कौए ने जिज्ञासा की कि फिर कौन है पक्षियों में सबसे ज्यादा भाग्यशाली? मोर ने कहा-सबसे ज्यादा भाग्यशाली तू है जो खुले आकाश में उड़ान भरता है। वह कौआ उसके मुँह से अपनी प्रशंसा सुनकर सहम गया और काँव-काँव करता हुआ उड़कर वृक्ष की किसी डाली पर बैठ गया।

पक्षी ही नहीं, कोई भी प्राणी बंधन में रहना नहीं चाहता, हर व्यक्ति स्वतंत्र और अपने ढंग से जीना चाहता है। ऊपर का नियंत्रण वह पसंद नहीं करता, नियम और मर्यादाएँ उसे बंधन लगती हैं। रोक-टोक में रहने को वह गुलामी समझता है। एक छोटे बच्चे ने अपने पापा से कहा-पापा! मम्मी हर वक्त मेरे पर रोक-टोक करती रहती है, मैं सुनता-सुनता तंग आ गया, यह रोक-टोक कब बंद करेगी? उसका पिता बोला-बेटा! इसकी रोक-टोक अभी तक मैं भी सुनता हूँ, तू तो अभी बच्चा है। छोटा बच्चा भी नियंत्रण में रहना नहीं चाहता।

इस स्वतंत्रता के युग में तेरापंथ धर्मसंघ में दीक्षित होने वाला हर मुनि नियंत्रण को सहर्ष स्वीकार करता है। वह मर्यादा में रहने को गुलामी नहीं मानता। यही कारण है कि तेरापंथ में गुरु का

अनुशासन शिष्य की प्रगति का द्वार बन जाता है। मर्यादाओं का सृजन करके स्वच्छंदाचार को समाप्त करने के लिए आचार्य भिक्षु ने एक जीवंत ब्रह्मास्त्र तैयार कर दिया। वे अध्यात्मयोगी ही नहीं, व्यवहारविद् भी थे। आने वाला समय कैसा होगा, उसकी नब्ज को उन्होंने पहचान लिया था। वे जिस संघ को छोड़कर आए थे वहाँ की स्थितियों का भी वे अध्ययन कर चुके थे। संघ को दीर्घजीवी और स्वस्थ रखने के लिए उन्होंने समय-समय पर मर्यादाओं का निर्माण किया। उन्होंने मर्यादा निर्माण के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए लिखा-शिष्य, वस्त्र और साताकारी क्षेत्र का ममत्व करके अनंत जीव अब तक नरक निगोद में चले गए, इसलिए शिष्य आदि की ममता मिटाने और चारित्र्य को निर्मल निरतिचार रखने के लिए मैंने ये मर्यादाएँ बनाई हैं। वि०सं० १८३२ में उन्होंने सबसे पहला मर्यादा पत्र लिखा। भगवान् महावीर के समय ७ पदों की व्यवस्था थी, आचार्य भिक्षु ने पहली धारा बना दी, 'सब साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें'। पूर्ववर्ती संघ में विहार, चातुर्मास संत अपनी मनमर्जी से करते थे, उस पर रोक लगाते हुए दूसरी धारा बना दी कि 'साधु-साध्वियाँ विहार-चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें'। शिष्य-शिष्याओं की खींचातान को मिटाने के लिए तीसरी धारा बना दी कि कोई भी अपना-अपना शिष्य-शिष्या न बनाए। साधु-साध्वियों की गुणवत्ता और तेजस्विता को महत्त्व देने के लिए चौथी धारा सर्वशक्तिसंपन्न आचार्य के लिए बना दी कि आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें, दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें। उत्तराधिकार को लेकर कोई समस्या खड़ी न हो इसके लिए पाँचवीं धारा बना दी कि आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुने, उसे सब साधु-साध्वियाँ सहर्ष स्वीकार करें। संघ की मजबूती के लिए आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन काल में कई मर्यादाएँ बनाईं। उनका लिखा हुआ अंतिम मर्यादा पत्र वि०सं० १८५६ माघ शुक्ला सप्तमी, शनिवार का है। आचार्य का एक विशेषण होता है-द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता। आचार्य भिक्षु का जीवन इसका मूर्तरूप है। वे जानते थे, भविष्य में समय और स्थितियों को देखकर आचार्य को मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन भी करना आवश्यक हो सकता है, इस दृष्टि से उन्होंने एक धारा बना दी कि आगे

जब कभी भी आचार्य आवश्यक समझे तो वे इन मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन करे और आवश्यक समझे तो कोई नई मर्यादा करे। पूर्व मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन हो अथवा कोई नई मर्यादा का निर्माण हो, उसे सब साधु-साध्वियाँ सहर्ष स्वीकार करें। यह आचार्य भिक्षु की दूरदर्शी सोच का ही परिणाम है कि उन्होंने संघ को रूढ़िग्रस्त नहीं बनने दिया, नवीनता के लिए सदा द्वार खुले रखे।

तेरापंथ धर्मसंघ आज जिन ऊँचाइयों को छू रहा है, उसके पीछे एकमात्र कारण ये मर्यादाएँ हैं। मर्यादा की नींव पर खड़े इस तेरापंथ को कहीं तनिक भी खतरा नहीं है। व्यक्ति अपने जीवन की सुरक्षा चाहता है तो उसे मर्यादा को बहुमान देना चाहिए। जो बंधन मानकर मर्यादा की अवहेलना करता है वह स्वयं ही अवहेलना का पात्र बन जाता है। पदयात्रा करते समय सड़क की एक ओर गाड़ियों के लिए एक सुंदर वाक्य लिखा था-'वेग मर्यादित, जीवन सुरक्षित'। इस वाक्य में एक प्रेरणा छिपी है कि व्यक्ति जीवन को सुरक्षित रखना चाहता है तो उसे मर्यादा में रहना चाहिए। रेलगाड़ी पटरी पर चलती है उसे कोई खतरा नहीं होता वह थोड़ी भी अगर इधर-उधर हो जाती है तो दुर्घटना घटित हो सकती है। नदी दो तटों के बीच में बहती है, बड़ी उपयोगी लगती है, उसमें भी जब बाढ़ आ जाती है, अपनी मर्यादा में नहीं रहती है तो वह प्रलयकारी रूप धारण कर लेती है। इसी तरह सर्दी, गर्मी, वर्षा, हवा आदि प्राकृतिक स्थितियाँ भी मर्यादा के अनुरूप होती हैं तो लोगों को आरामदायक लगती है, सीमा तोड़ने पर ये भी परेशानी का कारण बन जाती है।

मर्यादा को भार नहीं, व्यक्ति गले का हार समझे। हार बंधन नहीं होता, वह व्यक्ति की शोभा बढ़ाने वाला होता है। मर्यादा को बंधन नहीं, मुक्ति का द्वार समझे। स्वतंत्रता वरदान है किंतु स्वच्छंद व्यक्ति के लिए वह अभिशाप है। हम स्वतंत्र बनना चाहते हैं तो मर्यादा को जीवन में बहुमान दें। हम भाग्यशाली हैं, जिन्हें आचार्य भिक्षु द्वारा मर्यादाओं का मंत्र मिला। चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने उन मर्यादाओं को महोत्सव का रूप दे दिया। हर वर्ष माघ शुक्ला सप्तमी को वह महोत्सव वर्तमान आचार्य की सन्निधि में आयोजित होता है। मर्यादा का महोत्सव अमर रहे, हम सदा यह मंगलकामना करते हैं।

सप्ताह के विशेष दिन

21
फरवरी, 2024

भगवान अभिनंदन
दीक्षा कल्याणक

भगवान धर्मनाथ
दीक्षा कल्याणक

22
फरवरी, 2024

24
फरवरी, 2024

पक्खी

जीवन का निर्माण अनुशासन से ही संभव गंगाशहर।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान नैतिकता का शक्तिपीठ में कार्यशाला में 'आचार्यश्री तुलसी और अनुशासन' विषय पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि व्यक्ति निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण अनुशासन से ही संभव है। अनुशासन के अभाव में संस्कार और संस्कृति भी सुरक्षित नहीं रह सकती। कहा जा सकता है कि विकास का आधार है-अनुशासन। जब व्यक्ति का स्वयं पर नियंत्रण नहीं होता है तब होता है परानुशासन अर्थात् गुरु का अनुशासन। इसलिए आचार्य तुलसी ने घोष दिया था-'निज पर शासन-फिर अनुशासन।'

मुनिश्री ने आगे कहा कि व्यक्तित्व विकास का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है-अनुशासन। अनुशासन वह नींव का पत्थर है जिस पर जीवन का बहुमजिला महल खड़ा किया जा सकता है। जीवन को सद्संस्कारों में ढालने के लिए कड़ी मेहनत की अपेक्षा रहती है। जो व्यक्ति अनुशासन में रहना व सहना सीख जाता है निश्चय ही वह बहुमूल्य हीरा बनकर चमक बिखेरने में कामयाब हो सकता है। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने आचार्य तुलसी के जीवन के अनुशासन को परिभाषित करते हुए मधुर गीत का संगान किया।

मुख्य वक्ता वरिष्ठ उपासक, युवक रत्न राजेंद्र सेठिया ने कहा कि विकास का आधारभूत तत्त्व है-अनुशासन। आज तेरापंथ का अनुशासन जग जाहिर है। जहाँ समूह है वहाँ अनुशासन की अपेक्षा रहती है। आचार्य तुलसी एक ऐसे अनुशास्ता थे जिन्होंने अपने अनुशासन से पूरे धर्मसंघ को आकाश सी ऊँचाईयाँ प्रदान की।

इस अवसर पर संस्थान की ओर से आभार व्यक्त करते हुए मंत्री दीपक आंचलिया ने अपने भाव व्यक्त किए। उपाध्यक्ष किशन बैद, कोषाध्यक्ष ललित गुलगुलिया, सहमंत्री राजेंद्र पारख एवं भैरूदान सेठिया आदि की उपस्थिति रही।

वार्षिकोत्सव एवं पिकनिक का आयोजन टॉलीगंज।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में तीन ज्ञानशालाओं का संचालन हो रहा है। ज्ञानशाला का वार्षिकोत्सव हावड़ा के तारामंडल और खगोलीय अनुसंधान केंद्र (इडी ऑडिटोरियम तारामंडल) और रेल म्यूजियम में हुआ। मुनि जिनेश कुमार जी ने ज्ञानशाला के बच्चों प्रेरणादायक बातें बताईं एवं नए बच्चों को ज्ञानशाला आने की प्रेरणा प्रदान की। संयोजक विनय सेठिया और तेयुप कोषाध्यक्ष संदीप जैन, विकास सुराणा तथा सभी प्रशिक्षिका एवं बच्चे कार्यक्रम में उपस्थित थे।

इडी ऑडिटोरियम में कमल सेठिया ने व्यवस्थाओं को संचालित करवाया। टॉलीगंज सभा तथा ज्ञानशाला परिवार ने कमल सेठिया का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम की व्यवस्था में अजय आनंद पगलिया ने सहयोग दिया। सभा अध्यक्ष अशोक पारख द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

मर्यादा महोत्सव पर विशेष विश्व का विशिष्टतम उत्सव - मर्यादा महोत्सव

□ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' □

आज जब हम न केवल भारतीय परंपरा में बल्कि विश्व स्तर पर नजर पसारते हैं तो अनेक प्रकार के पर्वों, त्योहारों, उत्सवों की समायोजना देखने को मिलती है, जो उल्लासपूर्वक क्षणों में मनाए जाते हैं। किंतु इन सबसे अलग हटकर एक ऐसा भी धार्मिक महोत्सव मनाया जाता है, जिसको अलौकिक महोत्सव की उपमा से उपमित किया जा सकता है और वह अलौकिक महोत्सव है—मर्यादा महोत्सव। यह मर्यादा महोत्सव जैन धर्म के अंतर्गत तेरापंथ धर्मसंघ में हर वर्ष मनाया जाता है, जो अन्यत्र दुर्लभ कहा जा सकता है।

मर्यादा अर्थात् संविधान। जैसे तो प्रत्येक राष्ट्र, समाज और संघ का अपना संविधान होता है, परंतु तेरापंथ के संविधान की विलक्षणता यह है कि उस संविधान का केवल पठन और वाचन ही नहीं वरन् हृदय से उसका पालन होता है, क्योंकि वे मर्यादाएँ किसी पर थोपी हुई नहीं, सहज आत्मसाक्षी से स्वीकृत होती हैं। करीब दो शताब्दी पूर्व मारवाड़ की वीर प्रसूता पुण्य धरा पर जन्मा एक महामानव जिसने संन्यास स्वीकार कर एक धर्मक्रांति का शंखनाद फूँका वह मानव कोई और नहीं तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्राण आचार्यश्री भिक्षु थे, जिन्होंने अपने लौह हाथों से जो लकरीं खींची, वे लकरीं आज इस संघ की मर्यादाएँ बन गईं और इन मर्यादाओं पर चलकर साधक अपनी साधना के साथ गौरव की अनुभूति करता है। क्योंकि इन मर्यादाओं के साथ उसका प्रशस्त विवेक जुड़ा हुआ है, जिससे मर्यादाओं का सही मूल्यांकन हो पाया है।

श्रद्धा के युग में मर्यादाओं का पालन सहज हो जाता है किंतु तर्क के युग में इसकी अनुपालना सहज नहीं हो पाती, फिर भी संघ का प्रत्येक साधक इन मर्यादाओं के प्रति आस्थावान श्रद्धावान होकर पालन करता है। संघ के संचालक स्वयं आचार्य भी कुशलतापूर्वक साधक की अंतश्चेतना में मर्यादाओं के प्रति आस्था पैदा करते हैं। क्योंकि सक्षम व सफल नेतृत्व वह कहलाता है, जो सबको साथ लेकर चल सकें और वे ही मर्यादाएँ सफल और सार्थक होती हैं जो युगीन हों, तर्क सम्मत हों। आचार्य भिक्षु महान विलक्षण मेधा के धनी पुरुष थे, उन्होंने देखा धर्मसंघ विस्तार पा रहा है, तब उन्होंने संघ की सुव्यवस्था के लिए धाराएँ बनाई, वे धाराएँ मर्यादाएँ बनीं और वे मर्यादा निर्माता बन गए। किंतु धर्मसंघ की दृष्टि से उन मर्यादाओं का महत्त्व तब हो पाया जब संघ के प्रत्येक सदस्य ने उसे आचरण में स्वीकार किया। इसी तेरापंथ में चतुर्थ आचार्य श्रीमद् जयाचार्य ने इन मर्यादाओं को महोत्सव के रूप में मनाना प्रारंभ किया, अतः इस महोत्सव का नामकरण हुआ—मर्यादा महोत्सव। आचार्य भिक्षु से जब एक व्यक्ति ने प्रश्न किया भीखण जी आपका यह पंथ कब तक चलेगा? उन्होंने सहजता के साथ उत्तर

दिया जब तक इस संघ के दीक्षित साधु-साध्वियाँ इन मर्यादाओं का समर्पण एवं निष्ठा के साथ पालन करते रहेंगे, तब तक यह संघ चलता रहेगा। जिन सात साधुओं की विद्यमानता में मर्यादाएँ बनाई गईं, वे मर्यादाएँ आज सात सौ साधुओं में भी उसी प्रकार पालन की जा रही हैं तथा सात हजार की संख्या होने पर भी इसी प्रकार पालन की जाती रहेंगी, वे मौलिक मर्यादाएँ निम्न प्रकार हैं—

— प्रत्येक साधु-साध्वी एक आचार्य की आज्ञा में रहें। विहार चातुर्मास आचार्य के आदेशानुसार करें।

- शिष्य-शिष्याएँ नहीं बनाएँ।
- दलबंदी-गुटबंदी नहीं करें।
- पद के लिए उम्मीदवार न बनें।
- आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें।

इस प्रकार की ये छोटी-छोटी मर्यादाएँ व्यक्ति के जीवन को उच्चता और शिष्टता प्रदान करने वाली हैं। मर्यादा और अनुशासन के अभाव में व्यक्ति जीवन के आदर्श को प्राप्त नहीं कर सकता तथा जीवन को उच्छृंखल बना देता है वह राष्ट्र, समाज, संघ कभी भी विकास नहीं कर सकता जहाँ अनुशासन, व्यवस्था और मर्यादा के प्रति आस्था का भाव नहीं है। आस्था के अभाव में मर्यादाएँ हमारा कल्याण नहीं कर सकती। वे ही मर्यादाएँ सफल हो पाती हैं, जिनके प्रति गहरी आस्था का भाव हो। राजनीति के क्षेत्र में कानून डंडे के बल पर थोपा जाता है, आरोपित किया जाता है, जबकि धर्म के क्षेत्र में मर्यादाएँ सहज रूप से स्वीकृत होती हैं। तेरापंथ धर्मसंघ की मूल मर्यादाओं का निर्माण आचार्य भिक्षु द्वारा दो सौ वर्ष पूर्व किया गया, साथ ही उन्होंने उत्तरवर्ती आचार्यों को परिवर्तन और संशोधन का पूर्णतः अधिकार दिया। किंतु आज तक इतिहास में दस आचार्य हो चुके हैं। एकादशम आचार्य श्री महाश्रमण हैं, पर किसी भी आचार्य ने इन मूल मर्यादाओं में परिवर्तन या संशोधन की अपेक्षा नहीं समझी। प्रतिवर्ष माघ शुक्ला सप्तमी के दिन सैकड़ों-सैकड़ों साधु-साध्वियों द्वारा इन मर्यादाओं के प्रति आस्था दोहराई जाती है। इस अलौकिक महोत्सव के अवसर पर आचार्य साधु-साध्वियों के लिए चातुर्मासिक स्थानों की घोषणा करते हैं तथा जनता के मध्य मर्यादा पालन का संदेश देते हैं। साधु-साध्वियाँ आचार्य की आज्ञा को सहर्ष शिरोधार्य कर गुरु का आशीर्वाद प्राप्त कर अपने-अपने क्षेत्रों की ओर प्रस्थान कर देते हैं तथा जन-जन के बीच मर्यादा, अनुशासन, व्यवस्था, पारस्परिक, सौहार्द भाव, मानवीय एकता का संदेश प्रसारित करते हुए कल्याण-मार्ग पर बढ़ते रहते हैं। स्वतंत्र भारत में गणतंत्र दिवस अर्थात् २६ जनवरी का जो महत्त्व है, तेरापंथ धर्मसंघ में मर्यादा महोत्सव का वही महत्त्व है।

अहिंसा सत्य मर्यादा व भारतीय संस्कृति की प्राण प्रतिष्ठा का स्वरूप है राम का जीवन

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में 'भारतीय संस्कृति के उच्चतम आदर्श श्रीराम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण मुन्नी देवी सेठिया ने सुमधुर गीतिका से किया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा किसी व्यक्ति की नहीं उस विराट चैतन्य की जीवन प्रतिमा की प्रतिष्ठा है, जिसने अहिंसा, सत्य, मर्यादा आदि जीवन मूल्यों को जीकर भारतीय संस्कृति को एक प्रवणता प्रदान की है।

इसी शृंगला में साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने राम शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि राम मर्यादा पुरुषोत्तम एवं कर्तव्य परायण महापुरुष थे। विकास सेठिया, किरण देवी भंडारी ने सुमधुर गीतिका से वातावरण को राममय बना दिया। ताराचंद धारीवाल ने विचार व्यक्त किए। राजेंद्र फूलफगर, मंजू देवी एवं सवाई चंद भंडारी ने मुक्तक, कविता एवं अग्नि परीक्षा के पद्य द्वारा अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव एवं पिकनिक का आयोजन

साउथ हावड़ा।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में साउथ हावड़ा ज्ञानशाला की पिकनिक एवं वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। पिकनिक में वृहत कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल की आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता बाई चोरड़िया, आंचलिक समिति के वरिष्ठ सदस्य मालचंद भंसाली, क्षेत्रीय सह-संयोजिका मनीषा भंसाली, सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

पिकनिक में लगभग १०० ज्ञानार्थी और २५ प्रशिक्षिकाएँ और २० अभिभावकों ने भाग लिया। सभी के मनोरंजन के लिए प्रशिक्षिका ने विभिन्न गेम स्टाल लगाए, स्पोर्ट्स गतिविधियाँ करवाईं। गेम जोन और स्पोर्ट्स की तैयारी बीना जैन और हेमलता बेगवानी ने की।

सभी गेम्स और स्पोर्ट्स के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पिकनिक के साथ ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का भी आयोजन किया गया। वार्षिकोत्सव का शुभारंभ ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला गीत के साथ किया। कार्यक्रम का संचालन स्थानीय सह-संयोजिका पंकज दुगड़ ने किया। वार्षिकोत्सव में ज्ञानार्थियों एवं प्रशिक्षिकाओं ने रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रस्तुतियाँ दीं। डॉ० प्रेमलता चोरड़िया एवं सभा के पदाधिकारी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु गुलाब पींचा और सुरेश गोयल का सहयोग रहा।

ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी का आयोजन

तेरापंथी सभा द्वारा नए तरीके से आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। अध्यक्ष इंद्रचंद्र बैद ने बताया कि तेरापंथ गेम्स, भिक्षु सुपर किंग, जय रोयल्स, तुलसी सुपर जायट्स, महाप्रज्ञ रायल चैलेंजर्स, महाश्रमण टाईटन्स, लिटिल स्टार (ज्ञानशाला के बच्चे), फुटेसिन ग्रुप। आठ ग्रुप में ६-६ खिलाड़ी आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी में बेटिंग व बोलिंग, सेमायर बड़े ही रोमांचक तरीके से खेला गया।

महिला मंडल, तेयुप, कन्या मंडल, किशोर मंडल व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की उपस्थिति व दर्शकों की भीड़ सराहनीय रही। तेरापंथ सभा द्वारा सभी खिलाड़ियों का बिग कप दिया गया। प्रथम, द्वितीय व तृतीय ऑफ द मैच, विशेष रन नंबर को भव्य ट्रॉफी आकर्षक प्रदान की गई। यह पहला अवसर ५०० प्रश्नों का कठस्थ करना, हाजिर जवाब देना, धर्म, कर्म, स्वर्ग, नरक, चौबीस तीर्थंकर, जैन धर्म आदि प्रश्न थे।

प्रभारी मनोज धीया, प्रभारी अनुभूरा, कोषाध्यक्ष महावीर नाहटा, तेयुप अध्यक्ष गजेंद्र पारख, कार्तिक नाहटा, हर्षित भूरा, मौरी बैद व मौरी, हंसराज भूरा, सुरेश बोथरा का विशेष सहयोग रहा। आभार ज्ञापन सभा अध्यक्ष इंद्रचंद्र बैद ने किया।

संधारा समाचार

विजयनगर।

परमपूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से कामाक्षिपाल्या में प्रवासित पारसमल पूनमचंद्र कैलाशचंद्र रतनलालचौपड़ा की मातुश्री संधारा साधिका बादाम बाई (८७) धर्मपत्नी स्व० भेरूलाल चौपड़ा मदारिया निवासी को पारिवारिकजन की आज्ञा से उपासिका सुमित्रा बरड़िया व मुखारविंद से तिविहार संधारा का प्रत्याख्यान करवाया गया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेयुप अध्यक्ष राकेश पोरकरणा, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गादिया, बल्लारी से समागत उपासिका सरोज दुगड़ एवं सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, पारिवारिकजन एवं श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित रहा।



मर्यादा महोत्सव पर विशेष

मर्यादा का कल्पतरु हर आँगन में फले

□ साध्वी अणिमाश्री ● साध्वी सुधाप्रभा □

आज तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा के सुपरस्टार, मर्यादा पुरुष युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में 96^{वाँ} मर्यादा महोत्सव मुंबई में मना रहा है। मर्यादा के महाकुंभ की पवित्र जलधारा देश-विदेशों में प्रवाहित हो रही है। मर्यादा क्या है? मर्यादा क्यों जरूरी है? आओ, जानें—

मर्यादा संघ रूपी नगर का वह मजबूत परकोटा है, जिसमें रहकर व्यक्ति विकास के प्रांशु-शिखरों पर आरोहण करता है।

मर्यादा वह मजबूत रथ है, जिस पर आरूढ़ होकर व्यक्ति अपनी लक्षित मंजिल का वरण कर सकता है।

मर्यादा संघ रूपी सूर्य की प्रभास्वर किरण है, जिसकी प्रभा से सारा संघ देदीप्यमान हो रहा है।

संघ-कमल के चारों ओर मर्यादा व अनुशासन के गुंजायमान भंवरे संघ-चमन की शोभा बढ़ा रहे हैं।

संघ-समुद्र में मर्यादा व अनुशासन की लहरें हिलोरें ले रही हैं। उन लहरों का आलिंजन करने वाला व्यक्ति समुद्र की तरह गंभीरता व विशालता का वरण कर रमणीय बन जाता है।

सचमुच मर्यादा को सर्वस्व मानने वाला व्यक्ति, मर्यादा को प्राणाधिक मानने वाला संगठन, मर्यादा को सर्वोपरि मानने वाला परिवार, समाज, राष्ट्र उच्चत्व को प्राप्त कर उच्चता के शिखर पर आरूढ़ हो जाता है। हर क्षेत्र में मर्यादा का अपना विशिष्ट महत्त्व है—

व्यक्ति को महिमामंडित बनाती है—मर्यादा

मर्यादा से जीवन का शृंगार करने वाले राजकुमार राम न केवल श्रीराम कहलाए बल्कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अभिधान से महिमामंडित होकर जन-जन की श्रद्धा के धाम बन गए।

मर्यादा का शस्त्र हाथ में लेकर ज्येष्ठ पांडुपुत्र युधिष्ठिर धर्मराज युधिष्ठिर बनें एवं महाभारत में विजयी बने।

मर्यादा के पथ पर कदम बढ़ाने वाला युवा नरेंद्र एक दिन स्वामी विवेकानंद बनकर भारत की आँखों का तारा बन गया।

इतिहास में एक नहीं सहस्रों ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने मर्यादा का बाना पहनकर अपने जीवन को चमकाया है। उनमें एक नाम है—नेपोलियन बोनापार्ट का। बोनापार्ट नाम का एक युवा, जो आगे चलकर नेपोलियन के नाम से विश्व-विख्यात हुआ, जिसने मर्यादा, अनुशासन, आत्मसंयम और दूरदर्शिता से अपने व्यक्तित्व को गढ़ा।

नेपोलियन के किशोरावस्था की घटना है। उन्हें अपने अध्ययन के लिए अक्लोनी नामक स्थान में एक नाई के घर पर रहना पड़ा। वह आकर्षक व्यक्तित्व वाला एक युवा था। नाई की स्त्री उस पर मुग्ध हो गई और उसको अपनी ओर आकर्षित करने

का प्रयास करती रहती। किंतु नेपोलियन के सामने हिमालय जैसा लक्ष्य था। जब भी नाई की स्त्री बोलने का प्रयास करती, वह हाथ में पुस्तक लेकर पढ़ने लग जाता। नेपोलियन की दिनचर्या बड़ी संयमित, अनुशासित व मर्यादित थी।

वही नेपोलियन एक दिन अपने देश का प्रधान सेनापति बना। उसे एक बार उस स्थान पर जाने का मौका मिला, जहाँ रहकर उसने शिक्षा ग्रहण की थी। नेपोलियन का मन उस घर को देखने का हो गया, जहाँ रहकर उन्होंने अध्ययन किया था। नेपोलियन वहाँ पहुँचा, वह नाई की स्त्री दुकान में बैठी थी। नेपोलियन उस स्त्री से बतियाने लगा। उस स्त्री से पूछा—तुम्हें याद है, एक बोनापार्ट नाम का युवक पढ़ने के लिए तुम्हारे घर रहता था। वह बोली—आपने किस नीरस व्यक्ति का नाम ले लिया, वह भी कोई याद रखने वाला व्यक्ति था। जो न गाना जानता था और न नाचना। उसे तो मीठी बातें करनी भी नहीं आती थी, हमेशा किताबों में ही डूबा रहता था।

उस स्त्री की बातें सुनकर नेपोलियन खिलखिलाकर हँस पड़ा और कहने लगा—देवी! तुम ठीक कहती हो, वह ऐसा ही युवक था, पर हाँ वह बोनापार्ट यदि तुम्हारी रसिकता में उलझ गया होता तो आज देश का प्रधान सेनापति बनकर तुम्हारे सामने खड़ा नहीं होता।

सचमुच मर्यादा ही व्यक्ति को महान बनाती है। मर्यादित जीवन जीने वाला व्यक्ति एक दिन दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाकर सदियों-सदियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन जाता है। अपेक्षा है हर व्यक्ति अपनी जीवन-वगिया को मर्यादा व अनुशासन के फूलों से सुवासित करे।

संगठन को सशक्त बनाती है—मर्यादा

मर्यादा हर संगठन का प्राणवान आधार है। मर्यादा के अभाव में अनेक सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक संगठनों को टूटते व बिखरते देखा है।

जिस संगठन में विकास रूपी पतंग की डोर मर्यादा होती है, वह पतंग ऊँचे नील गगन में उड़ता हुआ सबके आकर्षण का केंद्र बन जाता है।

जिनशासन की एक अधुनातन शाखा, उदीयमान तेरापंथ धर्मसंघ अपनी मर्यादा व अनुशासन के कारण जिनशासन के ऊँचे नभ में सूरज बनकर चमक रहा है।

आज से लगभग 265 वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ की नींव डाली। आचार्य भिक्षु जानते थे कि मर्यादा व अनुशासन के बिना कोई भी संगठन तेजस्वी, यशस्वी व वर्चस्वी नहीं बन सकता। वे इस बात को जानते थे कि अनुशासनहीन व आचारहीन संघ अस्थिरों का ढाँचा मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए उन्होंने अपने अतीत के अनुभव, वर्तमान के युगबोध

और आगम परक सूझबूझ के द्वारा ऐसी मर्यादाओं का निर्माण किया, जो त्रैकालिक सत्य का प्रतीक बन गई हैं, वे मर्यादाएँ केवल उस युग के लिए ही नहीं बल्कि आने वाली सहस्राब्दियों तक संगठन का सुदृढ़ आधार बनेगी।

आचार्य भिक्षु ने अपने संघ के लिए जिन मर्यादाओं का निर्माण किया, वे मर्यादाएँ संघ के साधु-साध्वियों पर जबरन थोपी नहीं। उनका कहना था, मर्यादाएँ किसी पर थोपी नहीं जातीं, वे सहज आत्मसाक्षी से स्वीकृत होती हैं। आचार्य भिक्षु ने अपने हाथों से जो लकीरें खींची, वे लकीरें आज इस धर्मसंघ की मर्यादा बनकर संघ को सुरक्षा प्रदान कर रही हैं।

मर्यादा को प्राणाधिक मानने वाला संगठन ही शताब्दियों तक अपने वजूद को कायम रख सकता है। तेरापंथ इसका जागृत उदाहरण है।

समाज को विखंडित होने से बचाती है—मर्यादा

मर्यादा उस व्यवस्था व अनुशासन को कहते हैं, जिसे अंगीकार कर व्यक्ति, समाज, संगठन व राष्ट्र विकास करते हैं। अमर्यादित व्यक्ति, समाज एवं सभ्यता के विकास की बात तो दूर उनके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। इतिहास साक्षी है अमर्यादित रावण, कंस, दुर्योधन काल के गाल में समाहित हो गए। ऐसे ही अनेक समाज भी मर्यादा के अभाव में अपेक्षित विकास नहीं कर सके।

सभ्यता के बारे में 'यूनान, मिश्र, रोम सब मिट गए जहाँ से' पंक्ति सोदाहरण के रूप में प्रस्तुत की जा सकती है। इन राष्ट्र रूपी सभ्यताओं ने मर्यादाओं का बाना उखाड़ फेंका तो काल-कवलित हो गए।

मर्यादा वह अंकुश है, जो सभी को सीमा में रहकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। अगर हमें अपने समाज एवं सभ्यता को विखंडन से बचाना है तो मर्यादा की शरण स्वीकार करनी होगी।

परिवार की प्रगति व खुशहाली का राज है—मर्यादा

परिवार की खुशहाली एवं प्रगति के लिए जरूरी है—मर्यादा। जो परिवार अपने विवेक से, बुद्धि से मर्यादा का कवच पहनकर जीवन के यथार्थ धरातल पर उतरता है, वह सुरक्षित रहता है, मर्यादा वह फौलादी नींव है, जिस पर परिवार का महल मजबूती से टिका रहता है।

पर आज घर-परिवार में मर्यादाओं की उपेक्षा हो रही है। मर्यादा को नजरअंदाज किया जा रहा है। मर्यादा को भार माना जा रहा है। मर्यादा बंधन समझी जा रही है। पर सच मानिए, कभी-कभी बंधन भी हमारे लिए वरदान बन सकता है।

मोतियों को बाँधा तो गले का हार बन गया।

अगर परिवार को मोतियों की आभा से आभामंडित करना है तो घर-परिवार की एक मर्यादा होनी चाहिए। देश, समाज व संगठन की तरह परिवार का भी एक संविधान होना चाहिए।

जिस प्रकार हमारे धर्मसंघ की मौलिक मर्यादाओं में एक मर्यादा है—'सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें।' ठीक ऐसे ही परिवार की भी एक मुख्य मर्यादा होनी चाहिए कि परिवार का हर सदस्य परिवार के मुखिया की आज्ञा में चले। अगर हर परिवार में यह मर्यादा बन जाती है तो वह परिवार, समाज रूपी आकाश में ध्रुवतारे की तरह चमकने लगता है एवं उस परिवार की प्रगति एवं खुशहाली को कोई रोक नहीं सकता।

किंतु आज उच्छृंखलता, उद्वंडता एवं स्वच्छंदता के युग में पारिवारिक मर्यादाएँ ध्वस्त हो रही हैं। फलस्वरूप घर-परिवार में विखंडन की स्थितियाँ पैदा हो रही हैं। अगर अपने परिवार को इन स्थितियों से बचाना है तो मर्यादाओं का सम्मान करना सीखें।

मर्यादा महोत्सव के पवित्र दिन पर अपने मन को इस संकल्प से भावित करें कि मैं परिवार की मर्यादा का अक्षरशः पालन करूँगा/करूँगी एवं अपने परिवार को प्रगति एवं खुशहाली के राजमार्ग पर प्रस्थित करूँगा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार नदी की जलधारा के लिए जितना तट का महत्त्व होता है, उतना ही व्यक्ति, संगठन, समाज व परिवार के लिए मर्यादा का महत्त्व है। तट को तोड़कर जिस तरह नदी उच्छृंखल बन जाती है, विकास का साधन नहीं, विनाश का कारण बन जाती है, उसी तरह मर्यादाविहीन व्यक्ति, संगठन, समाज व परिवार उन्नति की दिशा में अग्रसर नहीं हो पाते, उनकी शक्ति का सही उपयोग नहीं हो सकता। इसलिए मर्यादा की गौरव-गाथा गाते हुए यही कहा जा सकता है कि—

जीवन के कदम-कदम पर जिसका साथ जरूरी है, वह है—मर्यादा।

जीवन को शक्ति का पर्याय बनाने वाली विधा का नाम है—मर्यादा।

मंजिल से मुलाकात करवाने वाली डगर का नाम है—मर्यादा।

जीवन-गुलशन की सदाबहार सौरभ का नाम है—मर्यादा।

जिंदगी की शमां के हर मोड़ पर फानूस बनकर हिफाजत करती है—मर्यादा।

हमारे शरीर के साढ़े तीन सौ करोड़ रोम से एक ही स्वर अनुगूँजित हो—

मेरं शरणं गच्छामि! मेरं शरणं गच्छामि!!

आत्मोन्नयन कार्यक्रम का आयोजन

अहमदाबाद।

अभातेयुप के नए कार्यक्रम आत्मोन्नयन (प्रतिदिन 9 परिषद करें सामायिक) का शुभारंभ शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया द्वारा हुआ। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी ने सामायिक एवं समता की साधना का महत्व समझाते हुए युवाओं को ज्यादा से ज्यादा सामायिक साधना की प्रेरणा दी।

मुकेश गुगलिया ने कहा कि इसके अंतर्गत वर्ष पर्यंत प्रतिदिन कम से कम एक परिषद सामायिक करते हुए आत्मा के उन्नयन मार्ग पर आगे बढ़ेगी। इस अवसर पर तेयुप द्वारा वृहद् स्तर पर सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया। जिसमें लगभग ५०० से अधिक श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष कांतिलाल चोरड़िया, आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था

समिति, अहमदाबाद के महामंत्री अरुण बैद, अभातेयुप परिवार के साथीगण, तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना, मंत्री कुलदीप नवलखा सहित पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

तेयुप अहमदाबाद के पूर्व अध्यक्ष ज्ञानचंद नोलखा, अशोक बरमेचा, विमल धीया, अनिल कोठारी, दिनेश बुरड़, सुनील कोठारी, अपूर्व मोदी, राजेश चोपड़ा, पंकज डांगी, ललित बेगवानी की उपस्थिति रही।

सेवा कार्य के विविध आयोजन

सैथिया।

तेयुप द्वारा गणतंत्र दिवस पर कर्म धर्म आश्रम में गरीब बच्चों में कंबल वितरण एवं अन्य सामग्री देकर सेवा कार्य किया। परिषद के अध्यक्ष अभिषेक छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। आश्रम के संचालक ने कहा कि प्रथम बार तेयुप, सैथिया के आगमन से आश्रम को काफी जागरूकता मिली तथा उन्होंने तेयुप के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस अवसर पर कोषाध्यक्ष प्रणव पुगलिया, सहमंत्री आदित्य छाजेड़, निवर्तमान अध्यक्ष अंकित बोथरा सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

राजराजेश्वरी नगर।

तेयुप ने कन्नवा गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, रामनगर में ४३ बच्चों को स्व० मोहिनी देवी बैद की पुण्यतिथि पर हनुमानमल, संजय, मनोज बैद, नोखा-बैंगलुरु एवं मार्गदर्शन फाउंडेशन के सहयोग से ट्रैक सूट सेट का वितरण करवाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। तेयुप अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। स्कूल प्राध्यापक ने तेयुप द्वारा किए गए सेवाकार्य की सराहना करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर तेयुप संगठन मंत्री विकास छाजेड़ का सहयोग रहा।

हैदराबाद।

तेयुप द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर देवनार फाउंडेशन स्कूल फॉर ब्लाइंड, बंसीलालपेट में स्पेशल बच्चों के साथ झंडारोहण कार्यक्रम व स्कूल के बच्चों की पढ़ाई हेतु जरूरत की चीजों का वितरण किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़, उपाध्यक्ष पीयूष बरड़िया, कोषाध्यक्ष ललित लुनिया, संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद, कार्यकर्ता सुदीप नौलखा एवं अरिहंत गुजरानी उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रायोजक कमल सौरभ बिरमेचा थे।

हैदराबाद।

तेयुप द्वारा मदर टेरेसा होम निर्मला शिशु भवन, क्लॉक टॉवर में विकलांग व स्पेशल बच्चों को जरूरत की चीजों का वितरण व नाश्ते की व्यवस्था की गई। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़, उपाध्यक्ष पीयूष बरड़िया, संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद आदि उपस्थित थे।

ध्वजारोहण समारोह का आयोजन

एचबीएसटी, हनुमंतनगर।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर कन्या सुरक्षा सर्किल पर मुख्य अतिथि मुकेश गादिया (आईआरएस, फाइनेंस ऑफिसर, साउथ वेस्ट रेलवेज, बैंगलोर) द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर सभा अध्यक्ष तेजमल सिंघवी, तेयुप प्रबंध मंडल, अभातेमम कार्यकारिणी सदस्य शशिकला नाहर, महिला मंडल अध्यक्षा सरोज दुगड़, महिला मंडल व कन्या मंडल सदस्यों की उपस्थिति रही।

ज्ञान प्राप्त कर श्रेयस्कर पथ को...

(पृष्ठ १४ का शेष)

पूज्यप्रवर के स्वागत में ऐरोली सभाध्यक्ष छोगालाल सोनी, स्वागताध्यक्ष धर्मेस किशनलाल तातेड़ की ओर से उनके प्रतिनिधि ने अपने उद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। तेरापंथ कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने संयुक्त प्रस्तुति से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए अणुव्रत अहिंसा सम्मान-२०२३ तुर्की-यूएसए की ब्रिजॉन अनवर को प्रदान किया गया। अणुविभा उपाध्यक्ष मनोज सिंघवी ने पुरस्कार की जानकारी दी। इंटरनेशनल अणुव्रत कॉन्फ्रेंस सह-संयोजक दीपक पुगलिया ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अणुविभा ट्रस्टी सुमतिचंद गोटी ने ब्रिजॉन अनवर का परिचय प्रस्तुत किया। ब्रिजॉन अनवर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में रियायती दर पर स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई।

स्वास्थ्य जाँच के अंतर्गत संपूर्ण रक्त गणना, लिपिड कोलेस्ट्रॉल, लीवर, थायरॉइड, किडनी एवं इलेक्ट्रोलाइट्स संबंधित लगभग ३६ टेस्ट समावेश किए गए। शिविर में कुल १८८ लाभार्थी लाभान्वित हुए।

तेयुप सदस्यों ने लाभार्थियों से वार्तालाप करते हुए एटीडीसी द्वारा प्रदत्त विभिन्न सेवाओं एवं डॉक्टरों की उपलब्धता से अवगत करवाया। इस शिविर को व्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टॉफ का सहयोग रहा। तेयुप से अध्यक्ष कमलेश गन्ना, कमलेश चोरड़िया, राजेश देरासरिया, अरविंद कोठारी, मुकेश भंडारी, ललित मुणोत एवं हरीश पोरवाड़ ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं।

स्वास्थ्य प्रोफाइल जाँच शिविर का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप, राजराजेश्वरी नगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एवं डेंटल केयर में भरत डूंगरवाल (मार्गदर्शन फाउंडेशन) के सहयोग से संपूर्ण स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर 'तुलसी हेल्थी जीवन' ७५ प्रतिशत छूट पर आयोजित किया गया।

सामूहिक नवकार महामंत्र से शिविर की शुरुआत हुई। अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने सभी का स्वागत किया। इस शिविर में स्वास्थ्य जाँच करवाकर १८४ लोग लाभान्वित हुए। अध्यक्ष विकास छाजेड़ ने भरत डूंगरवाल का सम्मान एवं आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अभातेयुप से दिनेश मरोठी एवं आलोक छाजेड़ की उपस्थिति रही। शिविर को सफल बनाने मंत्री धर्मेस नाहर, एटीडीसी संयोजक नरेश बाँठिया, तेयुप पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्य, किशोर मंडल एवं एटीडीसी का सहयोग रहा।

अणुव्रत गीत महासंगान

सैथिया।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के निर्देशानुसार सैथिया तेयुप के तत्वावधान में गीतांजलि पब्लिक स्कूल एवं बीरभूम विवेकानंद होम्योपैथिक कॉलेज में अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

इस महासंगान कार्यक्रम में स्कूल के अधिकतम बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में संभागा प्रमुख सुमित छाजेड़, तेयुप, सैथिया अध्यक्ष अभिषेक छाजेड़, सहमंत्री अंकुश छाजेड़, कार्यसमिति सदस्य सौरव छाजेड़, महिला मंडल के सदस्यों की उपस्थिति रही।

अध्यात्म साधना का महत्वपूर्ण सूत्र...

(पृष्ठ १५ का शेष)

नवी मुंबई स्तरीय आचार्य महाश्रमण नागरिक अभिनंदन समारोह में गणेश नाईक ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने विचार प्रस्तुत किए। संयोजक भगवती पगारिया ने सभी का स्वागत कर अभिनंदन पत्र का वाचन किया। गणेश नाईक आदि गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्यप्रवर को अभिनंदन पत्र निवेदित किया। महाश्रमण भजन मंडली एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने पृथक्-पृथक् गीत की प्रस्तुति दी। प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से मदन तातेड़ एवं मनोहर गोखरू ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

हस्त निर्मित उपकरणों

की प्रदर्शनी का आयोजन

जोबनेर।

शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में चारित्रात्माओं द्वारा निर्मित उपकरण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। तेरापंथी उपसभा, जोबनेर के संयोजक नोरतन ओसवाल ने साध्वीवृंद के प्रवास के बारे में जानकारी दी। श्रावक समाज ने प्रदर्शित उपकरणों को देखा एवं हस्त निर्मित उपकरणों को सराहा। दिगंबर समाज से मिक्की बड़जात्या, विनोद मीठा, अमित छाबड़ा, प्रवीण ठोलिया, महेंद्र जैन, मानक सेठी, कमल राठी, अमित बरड़िया, पन्नालाल, अभी सिंधी, ममता, आशा देवी सहित अन्यजन प्रदर्शनी में उपस्थित हुए।

धन, ज्ञान और शक्ति के साथ हो चरित्र का बल : आचार्यश्री महाश्रमण

नेरुल, नवी मुंबई,
२ फरवरी, २०२४

सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की लौ प्रज्वलित कर रहे आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नेरुल प्रवास के प्रथम दिन अपनी मंगल देशना में फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। हमें सम्यक् ज्ञान प्राप्त हो, यथार्थ का बोध हो, सच्चाई का बोध हो। ज्ञान प्राप्ति के लिए स्वाध्याय की अपेक्षा हो सकती है। अध्ययन करने से आदमी ज्ञानवान बन सकता है। धनवान बनना एक चीज है, उसका भी अपना महत्त्व है। संसार में लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा—ये तीन नाम सुनने को मिलते हैं। लक्ष्मी का संबंध धन-संपत्ति के साथ, विद्या और ज्ञान का संबंध सरस्वती से और शक्ति का संबंध दुर्गा के साथ माना जाता है। गृहस्थ को धन चाहिए, विद्यार्थी को ज्ञान प्राप्त करना है और सभी शरीर से और मन से शक्ति संपन्न होना चाहते हैं।

धन, ज्ञान और बल यह तीन चीजें हो जाती हैं। तीनों चीजें हर आदमी में समान रूप से हों, यह तो कठिन है। एक आदमी धनाढ्य है पर वह विद्वान भी हो, एक आदमी विद्या संपन्न है पर साथ में वह धनवान भी हो, कोई बलवान है पर वह ज्ञानवान भी हो यह आवश्यक नहीं है। ये तीनों चीजें एक साथ तो एक



जीवन में अच्छी मात्रा में मिलना थोड़ा कठिन काम लगता है। आदमी यह सोचे कि लक्ष्मी, विद्वता और बल जितना है वह ठीक पर मैं चरित्र संपन्न तो अवश्य बनूँ। चेहरा कितना सुंदर है, यह कोई महत्त्व की बात नहीं पर चरित्र सुंदर होना चाहिए।

आदमी बलवान हो जाए, लक्ष्मीवान हो जाए, विद्यवान भी हो जाए, ये अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं पर साथ में चरित्रवान भी होना चाहिए। ईमानदारी,

अहिंसा, संयम, सादगी, करुणा और मैत्री के संस्कार जीवन में होना चाहिए। चोरी और झूठ-कपट से बचने का प्रयास होना चाहिए। अहिंसा, ईमानदारी, संयम ये चरित्र के आयाम हैं। जीवन में धन, विद्वता और बल अधिकता में नहीं भी हो तो कोई बात नहीं पर चरित्र का बल, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्र है तो मानना चाहिए कि उसके पास बहुत कुछ है।

आदमी का दृष्टिकोण सही हो, यथार्थ परक हो, जीवन में अन्य विद्याओं के

अध्यात्म विद्या भी हो। दुनिया में अनेक विद्या संस्थान हैं, अनेकों पढ़ने और पढ़ाने वाले होंगे। जैन शासन में उपाध्याय होते हैं, वे ११ अंग, १२ उपांग के धारक होते हैं, अध्ययन और अध्यापन करने वाले होते हैं, मानो ज्ञान-यज्ञ करने वाले होते हैं। अनेक विद्याएँ पढ़ाई जाती हैं, उनके साथ अध्यात्म विद्या भी विद्यार्थियों को पढ़ाई जाएँ। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी ने जीवन विज्ञान के प्रशिक्षण की बात बताई थी, जिससे विद्यार्थियों को

जीवन में अच्छे संस्कार भी प्राप्त हो सकें। लक्ष्मी, विद्या और बल का महत्त्व है पर संस्कारों के अभाव में उनका दुरुपयोग हो सकता है। आदमी का चित्त, भाव पवित्र बन जाए तो उसके आचरण भी पवित्र रह सकते हैं।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि मनुष्यों में चक्रवर्ती को, देवताओं में इंद्र को, जानवरों में सिंह को, व्रतों में उपशम व्रत को, पर्वतों में सुमेरु को और जन्मों में मनुष्य जन्म को श्रेष्ठ बताया गया है। जैन धर्म में जीवन के चार वर्गीकरण हैं—नारक, तिर्यच, मनुष्य और देव। मनुष्य जन्म सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस जन्म में मनुष्य क्या करता है यह भी महत्त्वपूर्ण है। क्रोध का विष सर्प के विष से भी भयंकर होता है, क्रोध वैर को बढ़ाने वाला है, हम क्रोध पर नियंत्रण करने का प्रयत्न करें। प्रेक्षाध्यान, अनुप्रेक्षा आदि के प्रयोगों से क्रोध को नियंत्रित किया जा सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वागताध्यक्ष आनंद सोनी, तेयुप अध्यक्ष कांति कोठारी, महापौर जयवंत सुतार, नामदेव भगत, रवींद्र ठाकरे ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। तेममं ने गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान प्राप्त कर श्रेयस्कर पथ को चुनें : आचार्यश्री महाश्रमण



ऐरोली, नवी मुंबई,
३० जनवरी, २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी ने ऐरोली, नवी मुंबई के ज्योतिपुंज समवसरण में अपनी मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि मनुष्य के पास पाँच इंद्रियाँ हैं, जिन्हें ज्ञानेंद्रियाँ कहा जा सकता है। कान, आँख आदि पाँच इंद्रियाँ हैं, ये ज्ञान की माध्यम

हैं। इन पाँचों में भी दो इंद्रियाँ ज्ञान की बहुत बड़ी माध्यम बनती हैं—श्रोत और चक्षु। नाक से गंध का ज्ञान होता है, जिह्वा से रस का बोध होता है, स्पर्शन इंद्रिय से स्पर्श की अनुभूति हो जाती है। ज्ञान तो शेष तीन इंद्रियों से भी होता है परंतु श्रोत और चक्षु, इन दो से अधिक ज्ञान ग्रहण की संभावना रहती है।

हम कान से सुनते हैं, सुनते-सुनते

अनेक जानकारियाँ प्राप्त हो सकती हैं। धर्मोपदेश सुनकर ग्रहण किए जाते हैं, स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी सुन-सुनकर ज्ञान ग्रहण कर लेते हैं। आँख से भी हम ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। चक्षु न हो तो पढ़ने में कठिनाई हो सकती है। श्रोत और चक्षु दोनों से ज्ञान पुष्ट होकर प्राप्त हो सकता है। कई बार हम कान से सुनते हैं पर जब देखते हैं तो वो बात वैसी नहीं लगती। जो सुना वो आँख से देखने को हू-ब-हू मिलता है तो वह ज्ञान, वह बात या सूचना एकदम पुष्ट हो सकती है।

आदमी सुनकर कल्याण की बात को जानता है, पाप को भी जानता है। जो श्रेय है वह आचरण आदमी को करना चाहिए, कल्याणकारी पथ पर चलना चाहिए। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत का पथ दिखाया, व्यक्ति उस पथ को जान ले, ज्ञान कर ले, फिर कल्याणकारी बात को जीवन में उतारे और गलत बात को

छोड़ दे तो उसकी चेतना अच्छी बन सकती है। आचार्य महाप्रज्ञ जी प्रेक्षाध्यान कराते थे, प्रवचन भी कराते थे, शास्त्रों का संपादन भी करते थे। ये अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान ऐसे पथ हैं जिन पर चलने से व्यक्ति कल्याण को प्राप्त कर सकता है। अणुव्रत का ही सार है—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। ये तीन चीजें आदमी के जीवन में आ जाएँ तो आशा है कि आदमी का जीवन अच्छा बन सकता है, समाज और राष्ट्र भी अच्छा बन सकता है। हर आदमी महात्मा नहीं बन सके तो दुरात्मा तो न बने, सदात्मा बनने का प्रयास करे।

भगवान महावीर जैसे महापुरुष दुनिया में हुए हैं, इन महापुरुषों ने बहुत साधना की होगी। आज भी अच्छे ग्रंथों के रूप में ज्ञान का खजाना भारत में प्राप्त है। सूक्त, सुभाषित, संदेश को आत्मसात कर कल्याण की बात को जीवन में उतारने

का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ में भी साधना की चेतना हो सकती है, कुछ अंशों में गृहस्थ भी संतों का सा जीवन जी सकते हैं। गृहस्थ साधु न भी बन सके, त्याग, संयम, सज्जनता के गुणों से अपने जीवन को भावित करे तो उनकी चेतना पवित्र बन सकती है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि व्यक्ति वृद्ध हो जाता है, तब भी उसकी तृष्णा समाप्त नहीं होती है। आज भौतिक पदार्थों का आकर्षण बढ़ रहा है, उसके कारण व्यक्ति सुख का जीवन नहीं जी पा रहा है। यह आकर्षण या आसक्ति दुःख को पैदा करने में निमित्त बनती है। जो व्यक्ति आसक्ति को छोड़ देता है वह व्यक्ति सुख-शांति का अनुभव कर सकता है। वास्तव में धनी व्यक्ति वह होता है जिसके जीवन में संतोष आ जाता है।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

नवी मुंबई स्तरीय नागरिक अभिनंदन का हुआ आयोजन अध्यात्म साधना का महत्वपूर्ण सूत्र है इंद्रिय संयम : आचार्यश्री महाश्रमण



कोपरखैरना, मुंबई,
9 फरवरी, 2024

तीर्थकर के प्रतिनिधि, शांतिदूत परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कोपरखैरना के द्वितीय दिवस आगमवाणी की वर्षा करते हुए फरमाया कि मनुष्य एक पंचेन्द्रिय प्राणी है। हमारी दुनिया में एक ही इंद्रिय-स्पर्शनेंद्रिय होती है, जैसे पृथ्वीकाय, अष्काय आदि पाँच स्थावर काय के जीव। द्विइंद्रिय प्राणियों के स्पर्शनेंद्रिय के साथ रसनेंद्रिय भी होती है, जैसे लट आदि। त्रिइंद्रिय प्राणियों के स्पर्शनेंद्रिय, रसनेंद्रिय के बाद घ्राणेन्द्रिय भी होती है, जैसे कीड़े-मकोड़े आदि। चतुरेन्द्रिय प्राणियों के पिछली तीन इंद्रियों के अतिरिक्त चक्षु इंद्रिय और होती है, जैसे मक्खी-मच्छर आदि। पंचेन्द्रिय प्राणियों के शेष चार इंद्रियों के अतिरिक्त श्रोतेन्द्रिय भी होती है। गाय, घोड़ा हाथी आदि तिर्यक, मनुष्य, देवता और नारक भी पंचेन्द्रिय होते हैं।

पंचेन्द्रिय प्राणी होना विकास का द्योतक है। पाँच इंद्रियाँ जो हमें प्राप्त हैं, ये ज्ञान प्राप्ति की माध्यम हैं। इन पाँचों इंद्रियों में भी श्रोत्र और चक्षु के द्वारा हम कितना ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। इंद्रियाँ ज्ञान की साधना भी बनती हैं और पाप में भी सहायक बन सकती हैं। भावेंद्रियाँ तो विशुद्ध क्षयोपशम भाव हैं परंतु जब राग-द्वेष के भाव जुड़ जाते हैं तो इंद्रियाँ पाप कर्म के बंधन में सहायक बन जाती हैं।

इंद्रियों का हम सदुपयोग कर सकते हैं तो दुरुपयोग भी किया जा सकता है। कान से आर्ष वाणी, संत वाणी का, भजन-गीत का श्रवण भी किया जा सकता है। श्रीमद् जयाचार्य द्वारा रचित चौबीसी जैसे भक्ति गीतों का श्रवण भी किया जा सकता है और संगान भी किया जा सकता है। कान का उपयोग हम अच्छा सुनने में करें तो अच्छी सामग्री कान के माध्यम से भीतर में जा सकती है जिससे हमारी भावनात्मक शुद्धता का विकास हो सकता है। कोई दुखी आदमी की व्यथा सुन ले तो उनका दुःख भी थोड़ा कम हो सकता है। कंठस्थ ज्ञान को सुनने वाले के स्वाध्याय हो सकता है और सुनाने वालों का भी परिष्कार भी हो सकता है।

त्यागी-ज्ञानी पुरुषों का प्रवचन भी सुना जा सकता है। आगम वाणी, पवित्र वाणी कानों में जाती है तो ऐसी कल्याणी वाणी को सुनकर हमारे कान भी धन्य हो जाते हैं। रोहिण्ये चोर के तो बिना इच्छा भी भगवान की वाणी कानों में पड़ गई, उससे भी उसका हित हो गया। कोई मन से भगवद् वाणी, आगम वाणी, ज्ञानी चारित्रात्माओं की वाणी सुन ले तो उसका कल्याण तो निश्चित ही हो सकता है।

कान की शोभा कुंडल पहनने से हो सकती है पर अच्छी वाणी को सुनने से कानों का सदुपयोग हो सकता है। कोई अच्छी शिक्षा या सलाह दे तो उसे सुनना भी कानों का सदुपयोग है। विनय की शिक्षा देने वाले का कोई असम्मान कर देता है

तो मानना चाहिए कि वह व्यक्ति आने वाली लक्ष्मी को डंडे से रोक देता है। कान का दुरुपयोग न हो, दूसरों की निंदा सुनने से बचें, अनावश्यक बातों को सुनने में व्यर्थ समय ना गँवाएँ। चक्षु का उपयोग अच्छी पुस्तक, आगम आदि पढ़ने में, चारित्रात्माओं के दर्शन करने में करें, तो आँखों का भी सदुपयोग हो जाता है।

अच्छा सुनना, अच्छा देखना, अच्छा बोलना, अच्छा सोचना और अच्छा काम करना इनसे हमारी आत्मा अच्छी रह सकती है। पाँचों ही इंद्रियों का सदुपयोग करें, दुरुपयोग करने से बचने का प्रयास करें। नाक से दीर्घ श्वास का प्रयोग, प्राणायाम किया जा सकता है। जिह्वा से स्वाद लिया जाता है पर स्वाद और विवाद में आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। स्पर्शनेंद्रिय के भी संयम का अभ्यास करें। इंद्रियाँ जीती हुई हैं, संयमित हैं तो बड़ी कल्याणकारी बन सकती हैं। राग-द्वेष से जुड़कर इंद्रियों का उपयोग करते हैं तो पाप कर्म का बंध हो सकता है। अध्यात्म की साधना का महत्वपूर्ण सूत्र है—इंद्रिय संयम। पाँच इंद्रियाँ जो विकास की द्योतक हैं, इनके प्रति हम विवेक की चेतना को जगाए रखें।

स्थानीय तेमम अध्यक्षा, तेयुप अध्यक्षा महावीर लोढ़ा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला, तेरापंथ कन्या मंडल की सुंदर प्रस्तुति हुई। तेमम ने गीत का संगान किया।

(शेष पृष्ठ 93 पर)

संपादकीय

विज्ञान ने जगत को दो भागों में विभक्त किया है—सजीव और निर्जीव। जैन दर्शन भी दो राशि बतलाता है—जीव, अजीव। जीव को संसार में जीवन-यापन करने, विकास करने एवं साधना करने के लिए किसी-न-किसी माध्यम की, सहारे की आवश्यकता होती है। हालाँकि, एक इंसान कुछ हद तक अकेला रह सकता है, अकेला कार्य भी कर सकता है, पर उसका क्षेत्र बहुत ही सूक्ष्म होता है। जब एक और एक मिलकर दो, ग्यारह या उससे भी अधिक हो जाते हैं तो वे किसी रिश्ते का, किसी संस्था का या किसी संगठन का रूप ले लेते हैं। एक व्यक्ति हो तो उसे शायद किसी नियमावली की, मर्यादा की आवश्यकता न हो, पर प्रकृति तो अपने नियम अनुसार ही चलती है। यदि एक व्यक्ति भी नियम से अछूता नहीं है तो किसी संस्था के लिए तो नियम या मर्यादा अति आवश्यक है। मर्यादा हमें वह राह दिखाती है, जिस पर चलकर हमें अपने कर्तव्य का पालन करते हुए लक्षित मंजिल को प्राप्त करना है। मर्यादा है तो लक्ष्य है, बिना मर्यादा के लक्ष्य भी नहीं हो सकते।

हर परिवार, व्यापार, मल्टी नेशनल कंपनी, राजनीतिक दल, धार्मिक संगठन, सामाजिक संगठन, राज्य, देश आदि में प्रत्येक सदस्य हेतु कुछ करणीय और कुछ अकरणीय बातें चिह्नित रहती हैं। आपने देखा भी होगा कि हर बड़ी कंपनी के अपने विजन, मिशन और चार्टर स्पष्ट रहते हैं। देश का भी अपना संविधान होता है, जिसके माध्यम से नागरिक अपना एवं पूरे देश का कल्याण कर सकें। उसी प्रकार जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ का भी अपना एक संविधान है। संविधान तो शायद अन्य धार्मिक संगठनों के भी होंगे पर उस संविधान पर अक्षरशः चलना, 268 वर्षों बाद भी मूल गुणों को सुरक्षित रखना और उसे पूरे उत्साह के साथ उत्सव के रूप में मनाना, यह केवल तेरापंथ में ही मिल सकता है।

आचार्य भिक्षु ने सत्य शोध के लक्ष्य से एक अलग, पर कठिन पथ का चुनाव किया। साधु संघ की तत्कालीन व्यवस्थाओं, शिथिलताओं एवं भविष्य के गर्भ में छिपी अनेकों संभावनाओं को समझते हुए उन्होंने कुछ धाराओं का निर्माण किया। ये धाराएँ उन्होंने किसी पर थोपी नहीं अपितु एक-एक साधु को अलग-अलग दिखलाकर उनकी सहमति प्राप्त की। यह प्रसंग जहाँ आचार्य भिक्षु के आदर्श व्यवहार का उदाहरण है वहीं उन संतों की विनम्रता भी दर्शाता है। उन संतों ने सभी धाराओं को सहर्ष स्वीकार किया और शायद इसी के साथ तेरापंथ की नींव में समर्पण और अनुशासन की स्थापना हो गई।

तेरापंथ धर्मसंघ में पट्टोत्सव, चरमोत्सव और मर्यादा महोत्सव विशेष स्थान रखते हैं। इनमें भी मर्यादा महोत्सव सबसे बड़ा माना जाता है। संघीय संरचना को एकजुट और गतिशील रखने का यह अद्भुत पर्व हर वर्ष माघ महीने की शुक्ला सप्तमी को मनाया जाता है। सेवा, समर्पण एवं अनुशासन की भावना तेरापंथ धर्मसंघ के हर सदस्य को जन्मघूटी के रूप में प्राप्त हो जाती है। सेवा एवं समाधि केंद्रों हेतु सेवादायी सिंघाड़ों की घोषणा न केवल वृद्ध साधु-साध्वियों की चित्त समाधि एवं साधना में सहायक बनती है अपितु अन्य चारित्रात्माओं को सेवा और निर्जरा का प्रायोगिक प्रशिक्षण भी देती है। आचार्यप्रवर द्वारा संघ के सदस्यों की सारणा-वारणा इस उत्सव का अभिन्न अंग होता है। यदि कोई सदस्य कर्तव्य पथ से थोड़ा भी च्युत होता हो तो उसे परिष्कार एवं प्रायश्चित्त का अवसर प्राप्त हो जाता है। सप्तमी के दिन बड़ी हाजरी का वाचन, देश-विदेश के चतुर्मासों एवं समणी केंद्रों की घोषणा उत्सुकता लिए होती है। बजट में देश का वित्त मंत्री जब घोषणाएँ करता है तब तो आम नागरिक की भावना रहती है कि हमें क्या मिला, हमारा क्या बचा, पर मर्यादा महोत्सव की घोषणाएँ कुछ बचाने नहीं अपितु संघ के सदस्यों की कार्यशैली और गुणवत्ता को बढ़ाने में सहायक बनती हैं।

आवश्यक है कि संघ का हर सदस्य सेवा, समर्पण और अनुशासन के संस्कारों की अभिवृद्धि करता जाए। आचार्यप्रवर बहुधा फरमाते हैं कि प्राण छूट जाए पर प्रण ना छूटे। इस धर्मसंघ का हर सदस्य इस प्रेरणा को सदा आगे रखकर चले, गण और गणपति की प्रभावना के अनुरूप कार्य करता रहे और हम सभी वर्तमान अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि युगों-युगों तक प्राप्त करते रहें।



युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के शासनकाल में आयोजित



मर्यादा महोत्सव

160^{वां}
मर्यादा महोत्सव



आगामी मर्यादा महोत्सव

2081	2025	भुज
2082	2026	छोटी खाटू
2083	2027	लाडनूं

दुःख मुक्ति और समस्या मुक्ति के लिए, व्यक्ति को स्वच्छंदता पर नियंत्रण करना होगा। मर्यादा और अनुशासन स्वच्छंदता पर नियंत्रण करने वाले तत्त्व हैं।

-आचार्यश्री महाश्रमण